सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 159, नई दिल्ली, रविवार 17 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

03 जन्माष्टमी के उपलक्ष पर फेडरेशन ने किया प्रसाद वितरण का आयोजन

06 डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई जैन भारत के एक महान वैज्ञानिक

08 'आत्म–निर्भर', 'उन्नत', और 'विकसित भारत' का रोड मैप !

मानवता और मानवाधिकारों की रक्षा साझी (सरकार, जनता एवम् सामाजिक संस्थाओं/ ट्रस्ट) जिम्मेदारी है

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

क्या आप भी चाहते हैं की भारत देश के नागरिक होते हुए आपको आपके अधिकारों, मानवता और मानवधिकार प्राप्त रहे और कोई उनको आप से दूर नहीं कर पाएं, तो आप सबसे पहले जाने क्या है सरकार, जनता और सामाजिक संस्थाओं का दायित्व

सरकार का दायित्व

सरकार की भूमिका सबसे प्रभावशाली होती है, क्योंकि वही नीतियाँ बनाती और लागू करती है।

मुख्य दायित्व

1. संविधान और कानूनों का पालन व क्रियान्वयन

१. नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करना,

२. अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार का पालन

2. सुरक्षा और न्याय व्यवस्था

१. पुलिस और न्यायपालिका को पारदर्शी व जवाबदेह बनाना

२. भेदभाव, हिंसा और शोषण पर सख्त कार्रवाई

3. कल्याणकारी योजनाएँ

१. शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं की गारंटी

२. पिछड़े, वंचित और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए विशेष योजनाएँ

4. मानवता-आधारित नीतियाँ

१. शरणार्थियों, आपदा पीड़ितों, बच्चों और बुजुर्गों के लिए सुरक्षा प्रावधान,

वर्तमान स्थिति:- सकारात्मक पहलः डिजिटल शासन, कानूनी सुधार, कुछ राज्यों में स्वास्थ्य बीमा, शिक्षा में आरक्षण, और महिलाओं/बच्चों के लिए कानून।

चुनौतियाँ:

१. मानवाधिकार उल्लंघन की शिकायतों में देरी से न्याय

२. पुलिसिया दमन और हिरासत में यातना के आरोप

3. अल्पसंख्यकों और दलितों के खिलाफ हिंसा के मामले

४. भ्रष्टाचार और नीतियों का असमान क्रियान्वयन

2. जनता का दायित्व जनता केवल अधिकार पाने वाली नहीं, बल्कि कर्तव्यों का पालन करने वाली भी है।

मुख्य दायित्व

1. मानवता और सहिष्णुताः- धर्म, जाति, भाषा, लिंग के आधार पर भेदभाव न करना

2. कानून का सम्मानः- कानून व्यवस्था बनाए रखना, हिंसा/अत्याचार में भाग न लेना

3. सामाजिक जिम्मेदारीः- पीड़ितों की मदद, जरूरतमंदों को सहयोग, रक्तदान, आपदा राहत

4. जागरूकता और आवाज उठानाः-

१. मानवाधिकार उल्लंघन देखने पर रिपोर्ट करना

२. शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीकों से विरोध करना

वर्तमान स्थिति सकारात्मक पहलः सोशल मीडिया पर जन जागरूकता अभियान, स्वयंसेवा, फंडिंग से मदद

चुनौतियाँ:

१. अफवाहों और नफरत फैलाने वाली विचारधारा में फंसना

२. भीड़ हिंसा और ट्रोलिंग जैसी प्रवृत्तियाँ

. सामाजिक असमानताओं को लेकर संवेदनहीनत

3. सामाजिक संगठनों का दायित्वः- सरकार और जनता के बीच पुल का काम करते हैं।

मुख्य दायित्व

1. जागरूकता अभियानः- मानवाधिकार शिक्षा, कानूनी साक्षरता

2. मदद और पुनर्वासः- पीड़ितों को कानूनी, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक सहायता

3. नीतिगत सुझाव और निगरानीः- सरकार को सुधार के सुझाव देना, नीतियों की निगरानी करना

4. मानवता-आधारित कार्यः- अनाथालय, वृद्धाश्रम, शरण स्थल, शिक्षा केंद्र चलाना

वर्तमान स्थिति

सकारात्मक पहल:

१. एनजीओ और ट्रस्ट द्वारा स्वास्थ्य शिविर, शिक्षा, आपदा राहत

२. मानवाधिकार निगरानी रिपोर्ट्स और PIL (जनहित याचिका)

चुनौतियाँ:

१. फंडिंग की कमी और सरकारी पाबंदियाँ

२. कुछ संगठनों पर पक्षपात या गलत गतिविधियों के आरोप

3. ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुँच

ऊपरलिखित बातों को जानने के बाद सारांश :-

आज के समय में मानवता और मानवाधिकारों की रक्षा साझी जिम्मेदारी है।

1. सरकार को पारदर्शिता, समानता और त्वरित न्याय सुनिश्चित करना होगा।

2. जनता को संवेदनशील, जागरूक और जिम्मेदार बनना होगा।

3. सामाजिक संगठनों को नीतिगत सुधार और जमीनी सहायता के बीच संतुलन बनाना होगा।

भारतीय नागरिकों से अपीलः-

अगर आप भी अपने अधिकारों, मानवधिकार और मानवता के प्रति सजग हैं और सामाजिक दायित्व में हिस्सेदार बनना चाहते हैं तो आए हम सभी मिलकर

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST, (REGD)

के सदस्य बनकर अपना दायित्व निभाए।

क्या भारत सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा व्यवसायिक वाहनों के बिना उचित पार्किंग उपलब्ध करवाए, काटे गए नो पार्किंग के चालान उचित एवं न्यायिक ?

संजय बाटला

क्या सरकार सिर्फ राजस्व इजाफा की ही सच रखती हैं या जनहित में कार्यरत व्यवसायिक वाहनों को भारत देश की सड़को पर सुविधाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

ना पार्किंग स्थल, ना बेहतर आराम स्थल ना खाना – पानी और ना ही ड्राइवर को इमरजेंसी में दवाई, चिकित्सा और इलाज।

बस यह जरूर देखने को मिलता है चालान वो भी इस लिए की स्वयं पार्किंग स्थल प्रदान नही किए पर उसके एवज मे नो पार्किंग के चालान, आप की जानकारी हेतु प्रस्तुत कुछ चालानों की कापी जो ग़लती सरकार की उसका जुर्माना वाहन मालिकों और ड्राइवरों को, क्या इंसाफ

ट्रक व ट्रेलर्स व भारी व्यवसायिक वाहनों की ऑनलाइन चालान व्यवस्था – खुले भ्रष्टाचार व उत्पीड़न का नया माध्यम

सरकारी खजाने भरने के एवज मे गाड़ी मालिकों की आह व परिवार की सिसकियों के जिम्मेदार – प्रधानमंत्री, गृहमंत्री व सड़क परिवहन एंव राजमार्ग मंत्री

राउरकेला। देशभर में लागू की गई ऑनलाइन चालान (E-Challan) व्यवस्था को सड़क सुरक्षा और पारदर्शिता का उपाय बताया गया था, लेकिन वास्तविकता में यह प्रणाली भ्रष्टाचार, तकनीकी खामियों,छोटे ट्रक मालिकों और ट्रांसपोर्टरों के शोषण का नया जरिया बन चुकी है।

गलत चालान का अंबार – खराब कैमरा, GPS और तकनीकी त्रुटियों के कारण निर्दोष चालकों पर हजारों रुपये के चालान थोपे जा रहे हैं।जो गलत होते हुए गाड़ी मालिकों पर सीधे थोपे जा रहे हैं वह गाड़ी मालिक रोते बिलखते ही सही इसे जमा करने को मजबूर हैं1 भारी जुर्माना, छोटा अपराध – सीट बेल्ट, ओवरलोडिंग, नो पार्किंग या मामूली तकनीकी त्रुटि पर भी 5,000 से 25,000 तक चालान, जिससे छोटे ट्रक मालिक कर्ज में डूब रहे हैं। सरकार को इंफ्रास्ट्रक्चर के तहत अच्छी सड़के व पार्किंग की व्यवस्था देनी है किंतु अपनी कमियों को छुपाने का काम करते हुए छोटे गाड़ी मालिकों पर नो पार्किंग व अन्य धारा के तहत हजारों रुपए के फाइन थोक जा रहे हैं1 भ्रष्टाचार का नया रूप – चालान को "रद्द" या "कम" कराने के नाम पर परिवहन अधिकारियों द्वारा खुलेआम सरेराह अनियमित व लगातार वसूली जारी है। समय-समय पर चालक बंधुओं द्वारा एंव गाड़ी मालिकों के माध्यम से सोशियल मिडिया मे वायरल वीडियो / क्लिप / सोर्ट्स के जरिये यह देखा जा रहा है लेकिन उस वायरल वीडियो के ऊपर कोई क्रिया / प्रतिक्रिया व कार्रवाई नहीं होती यह शर्म की बात है1 डिजिटल पेमेंट की बाधाएँ – ग्रामीण क्षेत्रों के चालकों को ऑनलाइन भुगतान, QR कोड, पोर्टल आदि का ज्ञान न होने से और अधिक परेशानी हो रही है। जिसके ऊपर सुनवाई नहीं होती व सीधे कोर्ट फॉरवर्ड / चालान कर दिया जाता है जिससे गाड़ी मालिकों/ सारथीयों की परेशानी और बढ़ जाती है एवं कानूनी सलाहकारों के खर्चा अलग से जान की

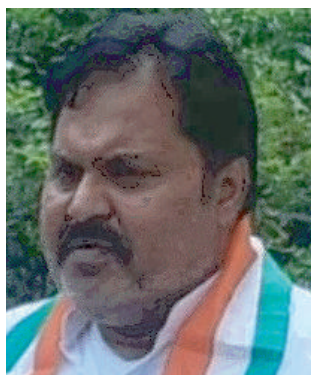

आफत बन जाती है1

परिवहन लागत में वृद्धि – अतिरिक्त जुर्माने का बोझ माल भाड़े में जोड़ा जा रहा है, जिससे आम जनता तक महंगाई बढ़ रही है जो व्यवस्था पर धीमे जहर का काम कर रही है एंव भोली भाली आम जनता को इसका भुगतान करना पड़ रहा है 1 चालकों का मानसिक उत्पीड़न लगातार चालान और वसूली के डर से सड़क पर उनकी एकाग्रता प्रभावित हो रही है जो सीधे तौर दुर्घटना को आमंत्रण देती है 1छोटे परिवहनकर्ताओं का संकट – बड़ी कंपनियों के मुकाबले छोटे ट्रांसपोर्टर सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं एवं सरकारी तंत्र व भ्रष्टाचार की इंतहा इतनी हो गई है कि जिन हाथों से छोटे गाड़ी मालिकों के ऊपर हजारों के ई-चालान काटे जा रहे हैं वहीं बड़ी कंपनियों व कारपोरेट लोगो (मार्का) देखने पर उनकी गाड़ियों पर चालान काटने हेतु अधिकारीयों व परिवहन कर्मचारियों को उनके नंबर प्लेट तक नहीं दिखते1

सड़क सुरक्षा की आड़ में लूट – ई चालान से सड़क सुरक्षा सुधरने की बजाय भ्रष्टाचार और भय का खुला व हृदय विदारक वातावरण बन गया है।

संगठन का पक्ष -' उफ्तत्सा ' * 'राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ₹ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी '– के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने कहाः

"सरकार ने कहा था कि ऑनलाइन चालान से पारदर्शिता आएगी और भ्रष्टाचार खत्म होगा। लेकिन आज सच्चाई यह है कि ई-चालान खुलेआम भ्रष्टाचार और उत्पीड़न का साधन बनते हुए हृदय छिलते हुए खून के आंसू बनकर बाहर आ रहे हैं । निर्दोष चालकों और छोटे ट्रांसपोर्टरों पर लगातार आर्थिक बोझ डाला जा रहा है सरकार में दम है या साहस है तो ई चालान के आरंभ होने से लेकर अब तक बड़ी व कॉरपोरेट कंपनियों के नाम पर कितने चालान काटे गए हैं यह सार्वजनिक करने का कष्ट करें । यह व्यवस्था सुधार की बजाय समस्याओं को और गहरा रही है एवं माननीय प्रधानमंत्री के एक देश एक विधान एक संविधान की बात को सीधे रूप से खारिज कर रही है "

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा सरकार से मांग करता है किः ई चालान को तुरंत बंद किये जाएं, पूर्व मे काटे गए ई-चालान व्यवस्था की स्वतंत्र जाँच कराई जाए, गलत चालानों की समीक्षा और निरस्तीकरण की व्यवस्था शीघ्रताशीघ्र हो, भ्रष्ट अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई हो, छोटे ट्रक मालिकों व चालकों को विशेष राहत पैकेज दिया जाए

मोर्चा ने चेतावनी दी है कि यदि सरकार ने समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाले दिनों में परिवहन क्षेत्र में बड़ा व अभूतपूर्व अनिश्चितकालीन आंदोलन छेड़ा जाएगा।

भगवान महावीर और बवाना रोड पर यातायात रहेगा प्रभावित... पीएम नरेंद्र मोदी करेंगे UER-2 का उद्घाटन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा यूईआर-2 के उद्घाटन के कारण दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है। भगवान महावीर रोड बवाना रोड जैसे मार्गों पर यातायात प्रभावित रहेगा। वाणिज्यिक वाहनों के लिए रिंग रोड से रोहिणी की तरफ जाने वाले रास्ते पर सुबह 6 से दोपहर 2 बजे तक प्रतिबंध रहेगा। यात्रियों को वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने की सलाह दी गई है।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को यूईआर-2 (अर्बन एक्सटेंशन रोड-2) का उद्घाटन करेंगे। इस मौके पर सुरक्षा व्यवस्था और यातायात प्रबंधन को देखते हुए, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने कई मार्गों पर अस्थायी बदलाव किए हैं।

इसकी जानकारी ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर दी है और लोगों से अपील की है कि यूईआर-2 की जगह वैकल्पिक मार्गों का इस्तेमाल करें।

ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक, उद्घाटन कार्यक्रम के कारण भगवान महावीर रोड, बवाना रोड, कंझावला रोड, कंझावला लिंक रोड और बादशाह दहिया मार्ग पर यातायात प्रभावित रहेगा।

व्यावसायिक वाहनों पर रोक

पुलिस ने अपील की है कि लोग इन रास्तों से बचकर वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें। वाहन चालक केएन काटजू मार्ग और रोहिणी जेल मार्ग होते हुए अपने गंतव्य तक पहुंच सकते हैं।

पुलिस से जारी एडवाइजरी के अनुसार, रिंग रोड से रोहिणी की तरफ जाने वाले रास्ते पर सुबह 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक वाणिज्यिक वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा।

मधुबन चौक, बाहरी रिंग रोड-केएन काटजू मार्ग क्रासिंग, बाहरी रिंग रोड-जेल रोड क्रॉसिंग, दीपाली चौक, जयपुर गोल्डन अस्पताल क्रासिंग, महादेव चौक, पंसाली चौक, काली चौक, वजीरपुर डिपो, संजय गांधी ट्रांसपोर्ट नगर, यूईआर-2, बवाना रोड, बरवाला चौक, रोहिणी सेक्टर 35-36 क्रॉसिंग और कबूतर चौक से आगे जाने की अनुमति इन वाहनों को नहीं होगी।

पीरागढ़ी से रोहतक रोड का करें इस्तेमाल

मुकुंदपुर चौक और मधुबन चौक से नांगलोई की ओर जाने वालों को सलाह दी गई है कि वे यूईआर-2 की जगह पीरागढ़ी से रोहतक रोड का इस्तेमाल करें। इसके अलावा, केवल वही लोग भगवान महावीर मार्ग और काली चौकी से आगे जा सकेंगे जिन्हें उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल होने की अनुमति है।

शराब छोड़ने / छुड़ाने के अचूक उपाय एवं टोटके

शराब का नशा बहुत ही घातक माना जाता है । एक अनुमान के अनुसार शराब के नशे के कारण हर साल लगभग 40 लाख से ज्यादा लोगों की जान जाती है । एड्स, टीबी और हिंसा के शिकार व्यक्तियों को मिलाकर देखा जाए, तो भी शराब की चपेट में आकर जान खोने वाले लोग कहीं अधिक हैं।

विश्व भर में हर 18 मौतों में एक मौत शराब के कारण से ही होती है। सड़क दुर्घटनाओं में भी सबसे ज्यादा मौतें शराब के नशे में गाड़ी चलाने से ही होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार शराब की वजह से हर 10 सेकेंड पर एक व्यक्ति की मौत होती है। विश्व भर में मरने वाले लोगों में से करीब 6 प्रतिशत आल्कोहल की वजह से मरते है ।

वैज्ञानिको के अनुसार लगभग 200 से अधिक बीमारियाँ शराब के कारण ही होती हैं । शराब से आपको लिवर का कैंसर या लिवर सिरोसिस होने का खतरा भी किसी दूसरे के मुकाबले 10 गुना ज्यादा होता है । इसके अतिरिक्त निमोनिया, एड्स, टीबी और नपुंसक होने का खतरा भी शराब के कारण से बढ़ता है। शराब हमारी स्मृति पर भी बुरा प्रभाव डालता है। शराब पीने से नेत्रों की ज्योति भी कमजोर होती है।

शराब स्त्रियों के लिए तो बहुत ही ज्यादा खतरनाक है । इससे उनकी प्रजनन क्षमता प्रभावित होती है। उनकी होने वाली संतानो पर इसका बहुत ही दुषप्रभाव पड़ता है। वह कमजोर, मानसिक रूप से दुर्बल और विकलांग तक पैदा हो सकती है । शराब के कारण से महिलाओं में कोलन (मलाशय) और ब्रेस्ट कैंसर का खतरा भी बहुत बढ़ जाता है।

इसके अतिरिक्त शराब के कारण से तमाम बुराइयों को भी बढ़ावा मिलता है क्योंकि शराब पीने के बाद व्यक्ति को किसी भी प्रसंग का होश नहीं रहता है । वह सही और गलत का फैसला नहीं कर पाता है । शराब के नशे की वजह से घरेलू हिंसा, बलात्कार, मारपीट और आत्महत्या जैसे मामले बहुत अधिक बढ़ जाते है । जो लोग सक्षम नहीं है उनकी इस आदत की वजह से परिवार को बहुत ज्यादा आर्थिक दिक्कतों का भी सामना करना पड़ता है । उसके पत्नी बच्चो और परिवार के अन्य सदस्यों की बहुत सी आवश्यकतायें भी पूरी नहीं हो पाती है। इसलिए आल्कोहल के इस बुरे असर से आम लोगों को बचाने की बहुत ही जरूरत है। हम यहाँ पर आपको कुछ ऐसे आसान उपाय / टोटके बता रहे है जिससे निश्चय ही किसी भी व्यक्ति की शराब की आदत छूट जाएगी ।

* अगर कोई व्यक्ति शराब छोड़ना चाहता है तो उस व्यक्ति को जब भी शराब पीने की इच्छा हो तब किशमिश का 1 -2 दाना मुंह में डालकर चूसें इसके आलावा वह किशमिश का शरबत का भी सेवन करें।

* शराब की प्रवृत्ति छुड़ाने के लिए खजूर बहुत अधिक सहायता देता है। इसके लिए पानी में कुछ खजूर घिसें फिर दिन में दो - तीन बार इस मिश्रण का सेवन करें। इससे शीघ्र ही शराब की आदत छूट जायगी ।

* गाजर के जूस से शराब पीने की इच्छा कम होती जाती है । दिन में एक गिलास गाजर का जूस अवश्य ही पीये यह शराब को छोड़ने में बहुत सहायक होता है इससे नेत्रों की रौशनी बढ़ती है और पाचन तंत्र में भी सुधार होता है।

एक और आजमाया हुआ उपाय है शिमला मिर्च (कैप्सिकम) लेकर जूसर से उसका रस निकाल लीजिए । इस रस का सेवन दिन में दो बार आधा आधा कप भोजन के बाद करें । इस अचूक उपाय से शराब की तलब अपने आप घटने लगती है और फिर जल्द ही पूरी तरह से समाप्त हो जाती है ।

* शराब छुड़ाने का एक और अचूक उपाय है । आप सोने-चाँदी का काम करने वाले सुनार के पास से सल्फ़्युरिक एसिड यानि शुद्ध गंधक का तेज़ाब ले आइए और जिसकी शराब छुड़वानी हो उसके शराब के पैग में चुपचाप इस तेज़ाब की चार बूंद डाल दीजिए। फिर उसे पीने दीजिये। ऐसा कुछ समय तक लगातार कीजिये । कुछ ही दिन में आपको यह महसूस होगा कि शराबी व्यक्ति की शराब पीने की इच्छा स्वतः ही अपने आप ही कम होने लगी है । उसे शराब के प्रति अरुचि होने लगेगी । लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि व्यक्ति को इस दौरान स्वास्थ्यवर्धक आहार अवश्य ही दें ।

* शराब पीने वाले लोगो के शरीर मे सल्फर (SULPHUR) की बहुत ज्यादा कमी हो जाती है उसके लिए किसी भी होम्योपैथिक की दुकान से SULPHUR 200 खरीद कर इसका प्रयोग करे ये बहुत ही आसानी से शराब की लत को छुडा देता है। इसकी एक बूंद सुबह खाली पेट जीभ पर डाल लीजिये फिर आधे घंटे तक कुछ भी नहीं खाएं । ऐसा लगातार 5-6 दिन तक करें । इसके बाद हफ्ते में 2-3 बार इसे लेते रहे, लगातार डेढ़ से दो महीने तक ऐसे ही लेते रहने से बड़े बड़े पियक्कड की भी शराब की लत छूट जाती है ।

* तंबाकू, गुटका, बीड़ी, सिगरेट आदि नशा करने वालो के शरीर में फास्फोरस (PHOSPHORUS) तत्व की कमी हो जाती है उसके लिए PHOSPHORUS 200 का ऐसे ही प्रयोग करे। इसके प्रयोग से तंबाकू, गुटका, बीड़ी, सिगरेट आदि सभी नशे की आदत अवश्य ही छूट जाती है।

* 500 ग्राम देसी अजवाइन को पीसकर उसे 7 - 8 लीटर पानी में दो दिन के लिए भिगो दें। फिर उसे धीमी आंच पर इतना पकाएं कि वह पानी लगभग 2 लीटर रह जाए। इस पानी को ठंडा होने पर छान कर किसी साफ बोतल में भर दें। अब जब भी आपकी शराब पीने की इच्छा हो आप इसे 5 - 5 चम्मच पियें । इसके सेवन में कुछ ही दिनों में शराब पीने कि आदत समाप्त हो जाती है ।

गोगा नवमी आज

पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह में कृष्ण पक्ष की नवमी पर गोगा नवमी मनाई जाती है। गोगा देव की पूजा सावन माह की पूर्णिमा से शुरू होती है, जो पूरे 9 दिनों तक चलती है। नवमी तिथि पर गोगा देव की विशेष रूप से पूजा-अर्चना की जाती है, इसलिए इसे गोग नवमी के रूप में मनाया जाता है।

गोगा नवमी मुहूर्त

भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि का प्रारंभ 16 अगस्त को रात 9

बजकर 34 मिनट पर हो रहा है। वहीं इस तिथि का समापन अगले दिन यानी 17 अगस्त को शाम 7 बजकर 24 मिनट पर होगा। ऐसे में उदया तिथि को देखते हुए गोगा नवमी का पर्व रविवार, 17 अगस्त को मनाया जाएगा।

श्री गोगा नवमी का महत्व

श्री गोगा नवमी, राजस्थान का लोकपर्व है, जिसे स्थानीय भाषा में गुग्गा नवमी भी कहते हैं। इसके अलावा यह पर्व हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश के कई राज्यों में मनाया जाता है। माना जाता है कि गोगादेव जी के पास नागों को वश में करने की शक्ति थी। ऐसे में जो भी साधक गोगा नवमी पर गोगा देव की पूजा करता है, तो उसे सांप के डसने का डर नहीं रहता। साथ ही श्री गोगादेव की पूजा से साधक के जीवन में सुख-समृद्धि का भी वास बना रहता है।

गोगा नवमी पूजा विधि

गोगा नवमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निवृत हो जाएं और साफ-सुथरे कपड़े पहनें। इसके बाद पूजा स्थल पर गोगा देव जी की मिट्टी से बनाई हुई मूर्ति स्थापित करें। इसके बाद गोगा देव की पूजा में उन्हें हल्दी, चावल, रोली, वस्त्र और अन्य सामग्री अर्पित करें। इन दिन आप उन्हें भोग के रूप में खीर, चूरमा और गुलगुले (पुए) आदि का भोग लगाएं।

साथ ही गोगा देव जी के घोड़े को मसूर की दाल का भोग लगाएं। अंत में गोगा जी कथा का पाठ करें और उनकी आरती करें। सभी लोगों में प्रसाद बांटें। इसके साथ ही रक्षाबंधन पर बांधी गई राखी को इस दिन गोगा देव की अर्पित करने का भी विधान है।

कौन थे गोगादेव ?

प्रचलित कथाओं के अनुसार, गोगादेवजी का जन्म विक्रम संवत 1003 में चौहान राजवंश में हुआ था। गोगादेवजी के पिता का नाम ठाकुर जेवरसिंह और माता का नाम बाछल कंवर था। गोगादेव गुरु गोरखनाथ के परम शिष्य थे। गोगादेव को सांपों के देवता के रूप में पूजा जाता है। मान्यता है कि इनकी पूजा से सर्प काटने का भय नहीं रहता। गोगा नवमी पर राजस्थान के गोगामेढ़ी में हर साल विशाल मेला भी लगता है, जहां सभी धर्म के लोग गोगादेव की पूजा करते हैं।

समर्थकों की तीखी प्रतिक्रिया: "चुनाव सोशल मीडिया पर अभियान चलाने से नहीं, बल्कि बूथ स्तर पर संगठन और कार्यकर्ताओं की मौजूदगी से जीते जाते हैं"

समय बेहद कीमती है, और इसे बेवजह के मुद्दों पर यात्रा करके गंवाने की बजाय बूथ स्तर पर मजबूत कार्यकर्ता बैठाने पर ध्यान देना चाहिए क्युकी हमारे नेतृत्व ने ज़ब ज़ब बेवजह के मुद्दों पर यात्रा की हैं तब तब चुनाव हारे हैं।

अब केवल एक विचारधारा या वर्ग विशेष पर केंद्रित होकर चुनाव नहीं जीता जा सकता सर्व समाज का समर्थन, जमीनी कार्यकर्ता, और मजबूत संगठन ही चुनावी सफलता की कुंजी है।

उत्तर प्रदेश, संजय साग़र सिंह। आगामी चुनावों की तैयारियों के बीच राष्ट्रीय पार्टी के भीतर से असंतोष की आवाज़ें एक बार फिर मुखर हो गई हैं। आज़ की चर्चा में पार्टी के कुछ वरिष्ठ समर्थकों और जमीनी पुराने कार्यकर्ताओं ने शीर्ष नेतृत्व पर तीखे सवाल खड़े करते हुए कहा है कि 'सोशल मीडिया पर अभियान चलाने से नहीं, बल्कि बूथ स्तर पर संगठन और कर्मठ कार्यकर्ताओं की मौजूदगी से चुनाव जीते जाते हैं'।

राष्ट्रीय पार्टी की गिरती साख, सवालों के घेरे में पार्टी के सलाहकार

एक वरिष्ठ समर्थक ने खुलकर कहा, भारत की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी आज एक गंभीर आंतरिक संकट से जूझ रही है, और इस संकट की जड़ में पार्टी के ग़लत रणनीतिकार एवं ग़लत सलाहकार हैं। एक राष्ट्रीय पार्टी की लगातार कमजोर होती राजनीतिक स्थिति और जनसमर्थन में गिरावट ने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। शीर्ष नेतृत्व की ग़लत नीतियों और बेबजहा के गैर जिम्मेदार वक्तव्यों में निरंतर हो रही चूक का सीधा संबंध राष्ट्रीय पार्टी के मौजूदा सलाहकार तंत्र से है।

राष्ट्रीय पार्टी सही सलाह के अभाव में दिशाहीन होती जा रही है? 'आज हमारे पास न संगठन है, न जमीनी कार्यकर्ता। समय बेहद कीमती है, और इसे बेवजह के मुद्दों पर यात्रा करके गंवाने की बजाय बूथ स्तर पर मजबूत कार्यकर्ता बैठाने पर ध्यान देना चाहिए। क्युकी हमारे नेतृत्व ने ज़ब ज़ब बेवजह के मुद्दों पर यात्रा की हैं तब तब चुनाव हारे हैं।

"समझौतों की राजनीति में फंसी राष्ट्रीय पार्टी"

उन्होंने इस बात पर भी चिंता जताई कि राष्ट्रीय पार्टी को कई राज्यों में अब ₹समझौतों की राजनीति₹ का शिकार होना पड़ रहा है। 'दिल्ली में केजरीवाल, बिहार में लालू, और यूपी में अखिलेश जो सीटें देते हैं, उसी में पार्टी को संतोष करना पड़ता है। जबकि यूपी की सबसे वरिष्ठ नेता मायावती से कोई संवाद तक नहीं होता, जो न केवल एक मजबूत संगठन चलाती हैं, बल्कि उनके पास सक्रिय कार्यकर्ताओं की फौज भी है। दूसरी पार्टियाँ 'जिसकी जितनी हिस्सेदारी, उसकी उतनी भागीदारी' के सिद्धांत पर चलती हैं, लेकिन हमारी राष्ट्रीय पार्टी में चापलूसों और गलत सलाहकारों की वजह से यह समझ ही नहीं आ पा रही है।'

'न संगठन बचा, न जनसंपर्क और न ही राजनीतिक दूरदर्शिता'

समर्थकों का आरोप है कि हमारी राष्ट्रीय पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने नीतिगत और रणनीतिक स्तर पर बार-बार गलतियाँ की हैं, जिससे न केवल दलित, पिछड़े, गरीब और किसान वर्ग का भरोसा कमजोर हुआ है, बल्कि पार्टी की जनाधार वाली छवि भी धूमिल हुई है।

"नेतृत्व में हताशा और कार्यकर्ताओं में मोहभंग"

कुछ लोगों ने यह भी आरोप लगाया कि पार्टी का नेतृत्व चुनाव दर चुनाव हार से हताश होता जा रहा है, लेकिन आत्ममंथन की बजाय बिना तथ्यों के बयानबाज़ी और फेक न्यूज़ पर ज़्यादा समय जाया कर रहा है।

'आम गरीब जनता अब हमारी बातों को गंभीरता से सुनना बंद कर चुकी है। पार्टी के बड़े-बुजुर्ग नेता भी रोज़-रोज़ की नौटंकी और परिवारवाद की राजनीति से परेशान हैं। कुछ वरिष्ठ नेता कथित तौर पर पार्टी से किनारा कर रहे हैं या अन्य विकल्पों की तलाश में हैं।'

'फेक न्यूज़ और देशविरोधी छवि ने पहुंचाई भारी क्षति'

लोगों का एक गंभीर आरोप यह भी है कि राष्ट्रीय पार्टी की छवि अब आम जनता की नजर में राष्ट्रविरोधी होने लगी है। चुनाव सिर्फ सोशल मीडिया पर गालियां देने, सेना या संविधानिक संस्थाओं का अपमान करने से नहीं जीते जाते।

एक नेता ने कहा 'यदि आपके पास किसी के खिलाफ पुख्ता सबूत हैं, तो उसे कोर्ट में रखें। रोज़-रोज़ लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में फालतू बयानबाज़ी केवल राष्ट्रीय पार्टी की साख को ही नुकसान पहुंचा रही है।'

'कार्यकर्ता चाहिए, पोस्टर नहीं'

राष्ट्रीय पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि राष्ट्रीय पार्टी में अब कर्मठ कार्यकर्ताओं की कमी है, जो चुनावों के समय बूथ स्तर पर काम करें। फेसबुक और सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले समर्थक जमीनी स्तर पर कहीं नजर नहीं आते। जब यूपी-बिहार में बूथों पर कार्यकर्ता ही नहीं होंगे, तो जीत की उम्मीद किससे?'

'वोट केवल 19% से नहीं, सर्व समाज से मिलते हैं'

लोगों ने दो टूक कहा कि केवल एक विचारधारा या वर्ग विशेष पर केंद्रित होकर चुनाव नहीं जीता जा सकता। देश बदल रहा हैं अब 19% वोट बैंक के भरोसे किसी भी पार्टी को जीत नहीं मिलने वाली। सर्व समाज का समर्थन, जमीनी कार्यकर्ता, और मजबूत संगठन ही चुनावी सफलता की कुंजी है।

आखिर में उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय पार्टी आज जिस संकट का सामना कर रही है, उसका मुख्य कारण उसका संगठनात्मक ढांचा, कमजोर रणनीति, परिवारवाद पर अति-निर्भरता और आम जनता से बढ़ती दूरी बताया जा रहा है। अब देखना यह होगा कि पार्टी शीर्ष नेतृत्व इन आंतरिक आवाजों को सुनता है या एक और चुनाव हारने के बाद आत्ममंथन की प्रक्रिया फिर से टाल दी जाएगी।

जनता का भरोसा तभी लौट सकता है जब राष्ट्रीय पार्टी एक बार फिर जिम्मेदार, जनोन्मुखी और शालीन राजनीतिक व्यवहार की ओर लौटे और यह तभी संभव है जब शीर्ष नेतृत्व के इर्द-गिर्द सही सोच और समझ रखने वाले लोग हों।

हिमालय का महाकुंभ जो पूरी पैदल यात्रा होती है, आयोजित होती है हर बारा वर्ष बाद।

नंदा राज जात यात्रा जो मा पार्वती यानी नंदा देवी के लिए समर्पित है। जिसे हिमालय का महाकुंभ भी कहते है। यह यात्रा पूरे उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊं में हर बारा साल बाद हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस यात्रा के पीछे ऐसी कथा है कि जब माता पार्वती जिन्हें नंदा देवी उत्तराखंड में कहते है एक समय कैलाश में माता को अपने मैत (माइके) की याद आने लगी और तब उन्होंने अपने भाइयों हीत, बिनसर और लाटू अपनी माता मैनावती और पिता राजा हिमावंत सबकी याद आ रही थी तब जब माइके में जब सबको इस चीज का आभास हुआ। तब माता के भाई हीत, बिनसर और लाटू तीनों कैलाश में आते है और माता को माइका लेकर आते है और जब माता माइका आती है तब हर्षोल्लास के साथ उनका स्वागत किया जाता है और जब बारी आती है कैलाश जाने की तब एक भव्य यात्रा होती है वही यात्रा है नंदा राज जात यात्रा।

माता के माइके आने का संकेत यह है कि गांव में का चौसिंगया खाडू यानी चार सिंग वाले भेड़ जन्म होता है वही संकेत होती है कि माता आगई माइके और यही भेड़ पूरी कैलाश यात्रा में जाता है हीत, बिनसर और लाटू के साथ और खुद इस भेड़ को कैलाश में छोड़ दिया जाता है।

यह यात्रा गढ़वाल में चमोली के नौटी गांव से शुरू होती है जिसमें माता अपनी डोली में बैठके पूरे गढ़वाल के बधानी गांव, कांसुवा (वहां के कुंवर माता का स्वागत करते है) सेम गांव, कोटि गांव, भगवती गांव, कुलसारी गांव, नंदकेसरी गांव, मुंडोली गांव, वान गांव, बेदनी बुग्याल (जहां महर्षि व्यास जी ने चार वेद लिखे), पठार नौछानी, भगवा बासा, त्रिशूली, रूपकुंड, शिला समुद्र से होमकुंड माता अपनी डोली में बैठकर अपने भक्त गण, अपने भेड़, अपने भाइयों के साथ सीधा होम कुंड से कैलाश की तरफ चली जाती है और वही कुमाऊं में माता अल्मोड़ा, नैनीताल और चंपावत से निकल कर अपने भेड़ के साथ पूरा कुमाऊं भ्रमण करके कैलाश चली जाती है।

अब अगला राज जात अगले साल यानी 2026 के अगस्त सितंबर के बीच में होगी 2013 के आपदा के कारण नंदा राज जात 2014 में हुई थी।

जय मां नंदा राज राजेश्वरी

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का ऐसा जीवन परिचय जन्माष्टमी विशेष

आज हम योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण का 5253वां जन्मोत्सव मना रहे हैं

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण का ऐसा परिचय जिसे शायद आपने पहले कभी सूना या पढ़ा होगा । 3228 ई.पू., श्रीकृष्ण संवत में श्रीमुख संवत्सर, भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, 21 जुलाई, बुधवार के दिन मथुरा में कंस के कारागार में माता देवकी के गर्भ से जन्म लिया, पिता- श्री वसुदेव जी थे । उसी दिन वासुदेव ने उन्हें नन्द-यशोदा जी के घर गोकुल में छोड़ा ।

1- मात्र 6 दिन की उम्र में भाद्रपद कृष्ण की चतुर्दशी, 27 जुलाई, मंगलवार, षष्ठी-स्नान के दिन कंस की राक्षसी पूतना का वध कर दिया ।

2- 1 साल, 5 माह, 20 दिन की आयु में माघ शुक्ल चतुर्दशी के दिन अन्नप्राशन-संस्कार हुआ ।

3- 1 साल की आयु त्रिणिवर्त का वध किया ।

4- 2 वर्ष की आयु में महर्षि गर्गाचार्य ने नामकरण-संस्कार किया ।

5- 2 वर्ष 6 माह की उम्र में यमलार्जुन (नलकूबर और मणिग्रीव) का उद्धार किया।

6- 2 वर्ष, 10 माह की उम्र में गोकुल से वृन्दावन चले गये ।

7- 4 वर्ष की आयु में वत्सासुर और बकासुर नामक राक्षसों का वध किया ।

8- 5 वर्ष की आयु में अघासुर का वध किया ।

9- 5 साल की उम्र में ब्रह्माजी का गर्व-भंग किया ।

10- 5 वर्ष की आयु में कालिया नाग का मर्दन और दावाग्नि का पान किया।

11- 5 वर्ष, 3 माह की आयु में गोपियों के साथ लीलाएं की।

12- 5 साल 8 माह की आयु में यज्ञ-पत्नियों पर कृपा की ।

13- 7 वर्ष, 2 माह, 7 दिन की आयु में गोवर्धन को अपनी उंगली पर धारण कर इन्द्र का घमंड भंग किया ।

14- 7 वर्ष, 2 माह, 14 दिन का उम्र में में श्रीकृष्ण का एक नाम 'गोविन्द' पड़ा ।

15- 7 वर्ष, 2 माह, 18 दिन की आयु में नन्दजी को वरुणलोक से छुड़ाकर लाये।

16- 8 वर्ष, 1 माह, 21 दिन की आयु में गोपियों के साथ रासलीला की ।

17- 8 वर्ष, 6 माह, 5 दिन की आयु में सुदर्शन गन्धर्व का उद्धार किया ।

18-8 वर्ष, 6 माह, 21 दिन की उम्र में शंखचूड़ दैत्य का वध किया ।

19- 9 वर्ष की आयु में अरिष्टासुर (वृषभासुर) और केशी दैत्य का वध करने से 'केशव' नाम पड़ा ।

20- 10 वर्ष, 2 माह, 20 दिन की आयु में मथुरा नगरी में कंस का वध किया एवं कंस के पिता उग्रसेन को मथुरा के सिंहासन पर दोबारा बैठाया ।

21- 11 वर्ष की उम्र में अवन्तिका में सांदीपनी मुनि के गरुकुल में 126 दिनों में छः अंगों सहित संपूर्ण वेदों, गजशिक्षा, अश्वशिक्षा और धनुर्वेद (कुल 64 कलाओं) का ज्ञान प्राप्त किया, पञ्चजन दैत्य का वध एवं पाञ्चजन्य शंख को धारण किया ।

22- 12 वर्ष की आयु में उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार हुआ ।

23- 12 से 28 वर्ष की आयु तक मथुरा में जरासन्ध को 17 बार पराजित किया ।

24- 28 वर्ष की आयु में रत्नाकर (सिंधुसागर) पर द्वारका नगरी की स्थापना की एवं इसी उम्र में मथुरा में कालयवन की सेना का संहार किया ।

25- 29 से 37 वर्ष की आयु में रुक्मिणी- हरण, द्वारका में रुक्मिणी से विवाह, स्यमन्तक मणि - प्रकरण, जाम्बवती, सत्यभामा एवं कालिन्दी से विवाह, केकय देश की कन्या भद्रा से विवाह, मद्र देश की कन्या लक्ष्मणा से विवाह । इसी आयु में प्राग्ज्योतिषपुर में नरकासुर का वध, नरकासुर की कैद से 16 हजार 100 कन्याओं को मुक्त कर द्वारका भेजा, अमरावती में इन्द्र से अदिति के कुंडल प्राप्त किए, इन्द्रादि देवताओं को जीतकर पारिजात वृक्ष (कल्पवृक्ष) द्वारका लाए, नरकासुर से छुड़ायी गयी 16, 100 कन्याओं से द्वारका में विवाह, शोणितपुर में बाणासुर से युद्ध, उषा और अनिरुद्ध के साथ द्वारका लौटे. एवं पौण्ड्रक, काशीराज, उसके पुत्र सुदक्षिण और कृत्या का वध कर काशी दहन किया ।

26- 38 वर्ष 4 माह 17 दिन की आयु में द्रौपदी-स्वयंवर में पांचाल राज्य में उपस्थित हुए ।

27- 39 व 45 वर्ष की आयु में विश्वकर्मा के द्वारा पाण्डवों के लिए इन्द्रप्रस्थ का निर्माण करवाया ।

28- 71 वर्ष की आयु में सुभद्रा- हरण में अर्जुन की सहायता की ।

29-73 वर्ष की आयु में इन्द्रप्रस्थ में खाण्डव वन - दाह में अग्नि और अर्जुन की सहायता, मय दानव को सभाभवन-निर्माण के लिए आदेश भी दिया ।

30- 75 साल की उम्र में धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ के निमित्त इन्द्रप्रस्थ में आगमन हुआ ।

31- 75 वर्ष 2 माह 20 दिन की आयु में जरासन्ध के वध में भीम की सहायता की ।

32-75 वर्ष 3 माह की आयु में जरासन्ध के कारागार से 20 ,800 राजाओं को मुक्त किया, मगध के सिंहासन पर जरासन्ध-पुत्र सहदेव का राज्याभिषेक किया ।

33- 75 वर्ष 6 माह 9 दिन की आयु में शिशुपाल का वध किया ।

35- 75 वर्ष 7 माह की आयु में द्वारका में शिशुपाल के भाई शाल्व का वध किया ।

36- 75 वर्ष 10 माह 24 दिन की उम्र में प्रथम द्यूत-क्रीड़ा में द्रौपदी (चीरहरण) की लाज बचाई ।

37- 75 वर्ष 11 माह की आयु में वन में पाण्डवों से भेंट, सुभद्रा और अभिमन्यु को साथ लेकर द्वारका प्रस्थान किया ।

38- 89 वर्ष 1 माह 17 दिन की आयु में अभिमन्यु और उत्तरा के विवाह में बारात लेकर विराटनगर पहुँचे ।

39- 89 वर्ष 2 माह की उम्र में विराट की राजसभा में कौरवों के अत्याचारों और पाण्डवों के धर्म-व्यवहार का वर्णन करते हुए किसी सुयोग्य दूत को हस्तिनापुर भेजने का प्रस्ताव, द्रुपद को सौंपकर द्वारका-प्रस्थान, द्वारका में दुर्योधन और अर्जुन—दोनों की सहायता की स्वीकृति, अर्जुन का सारथी-कर्म स्वीकार करना किया ।

40- 89 वर्ष 2 माह 8 दिन की उम्र में पाण्डवों का सन्धि-प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर गयें ।

41- 89 वर्ष 3 माह 17 दिन की आयु में कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को 'भगवद्गीता' का उपदेश देने के बाद महाभारत-युद्ध में अर्जुन के सारथी बन युद्ध में पाण्डवों की अनेक प्रकार से सहायता की।

42- 89 वर्ष 4 माह 8 दिन की आयु में अश्वत्थामा को 3, 000 वर्षों तक जंगल में भटकने का श्राप दिया, एवं इसी उम्र में गान्धारी का श्राप स्वीकार किया ।

43- 89 वर्ष 7 माह 7 दिन की आयु में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक करवाया।

44- 91-92 वर्ष की आयु में धर्मराज युधिष्ठिर के अश्वमेध-यज्ञ में सम्मिलित हुए ।

45- 125 वर्ष 4 माह की आयु में द्वारका में यदुवंश कुल का विनाश हुआ, एवं 125 वर्ष 5 माह की आयु में उद्धव जी को उपदेश दिया।

46- 125 वर्ष 5 माह 21 दिन की आयु में दोपहर 2 बजकर 27 मिनट 30 सेकंड पर प्रभास क्षेत्र में स्वर्गारोहण और उसी के बाद कलियुग का प्रारम्भ हुआ ।

पसमांदा विकास फाउंडेशन के ज़ेरे एहतमाम आज़ादी का जश्न जोशो-ख़रोश के साथ मनाया

शम्स आग़ाज़

नईदिल्ली। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन, बटला हाउस, जामिया नगर, ओखला में एक भव्य और गरिमामयी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय ध्वज फहराकर और सलामी देकर की गई, जिसके बाद छात्रों ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीत और राष्ट्रगान प्रस्तुत किए। इस अवसर पर छात्रों ने अंग्रेज़ी, उर्दू और हिंदी भाषाओं में स्वतंत्रता के महत्व पर प्रभावशाली भाषण दिए। कार्यक्रम के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता हाफिज़ व क़ारी मोहम्मद रुस्तम साहब ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हमें हमारे पूर्वजों की कुर्बानियों की याद दिलाता है। हमें इस दिन को केवल उत्सव तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इसके संदेश को अपनी ज़िंदगी में अपनाना चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा भी दें। देश की तरक्की में हमारा हर कार्य योगदान होना चाहिए यही सच्ची देशभक्ति है। हमें अपने चरित्र, ईमानदारी और एकता के ज़रिये इस देश को मज़बूत बनाना है।

मुख्य अतिथि, राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद रफ़ी ने मदरसों में स्वतंत्रता दिवस के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह देखकर दिल को बहुत सुकून मिलता है कि हमारे मदरसों के बच्चे भी तिरंगे को सलामी देते हैं और स्वतंत्रता के मूल्यों को याद करते हैं। इस तरह के कार्यक्रम छात्रों में देशभक्ति की भावना को और मज़बूती प्रदान करते हैं

प्रसिद्ध पत्रकार शहाबुद्दीन ने कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस का दिन हमें हमारी राष्ट्रीय ज़िम्मेदारियों की याद दिलाता है और यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम देश की प्रगति और एकता में अपनी भूमिका निभाएंगे।

कार्यक्रम में हाफिज़ मोहम्मद ज़ाहिद, मौलाना अब्सार, हाफिज़ शम्सुज्जमां, हाफिज़ एहतिशाम, हाफिज़ मोहम्मद अरशद और हाफिज़ सुबहान ने भी संबोधित किया और देश को ईमानदारी, एकता और मेहनत का संदेश दिया।

दिल्ली में लगता है सरकार है ही नहीं, किसी जिम्मेदार पर कोई कार्यवाही नहीं हो रही- सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने नाले और सीवर में गिरकर हो रही मासूम बच्चों की मौत पर गहरी चिंता जताते हुए भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। ₹आप₹ के दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज का कहना है कि दिल्ली के अंदर खुले नाले और सीवर मासूम बच्चों की जान ले रहे हैं और दिल्लीवालों के लिए विपदा बनी चार इंजन वाली भाजपा सरकार सो रही है। दिल्ली के वेलकम इलाके में भी एक बच्चा नाले में गिर गया और उसकी मौत हो गई। उन्होंने कहा कि दिल्ली में लगता है कि सरकार है ही नहीं। छोटे-छोटे बच्चे नाले और सीवर में गिर कर मर रहे हैं, किसी की कोई जवाबदेही नहीं है। किसी पर कोई कार्यवाही नहीं हो रही। दिल्ली सरकार द्वारा हर हादसे पर बस लीपापोती हो रही है ।

सौरभ भारद्वाज का कहना है कि देश की राजधानी में खुले नालों में गिरने से बच्चों की मौत हो रही। चार इंजन वाली भाजपा सरकार की नाकामी का इससे बड़ा और क्या सबूत होगा? भाजपा सरकार की वजह से एक और मासूम की जान चली गई। दिल्ली के वेलकम इलाक़े के एक नाले में गिरने से एक बच्चे की मौत हो गई। देश की राजधानी दिल्ली में पिछले 3 महीनों में भाजपा सरकार की लापरवाही की वजह से 30 से ज़्यादा लोगों को जान जा चुकी है। नालों में डूबकर अब तक कई लोगों की जान जा चुकी है लेकिन रेखा गुप्ता की सरकार कोई कार्यवाही करने की बजाय लीपापोती करने में जुटी है।

उन्होंने कहा कि शुक्रवार को निजामुद्दीन इलाके में बारिश में पानी जमा होने से दरगाह शरीफ पट्टे शाह परिसर में छत गिरने से 6 लोगों की मौत हो गई। बृहस्पतिवार को कालकाजी इलाके में पेड़ गिरने से बाइक सवार की दुखद मौत हो गई और डीडीए की दीवार गिरने से दो बच्चों की मौत हो गई। इससे पहले भी जलाभाव के चलते कई घटनाएं हो चुकी हैं जिनमें लोगों की जान जा चुकी है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के तमाम डीसिल्टिंग के दावों के बाद भी दिल्ली पूरी पानी-पानी हो गई। रेखा गुप्ता की सरकार को कुछ काम करना पड़ेगा। बिना काम किए, सिर्फ बड़ी-बड़ी बातें करने से दिल्ली के लोगों का भला नहीं होने वाला है।

अल-खैर पब्लिक स्कूल में धूम धाम के साथ स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाया गया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। 15 अगस्त के अवसर पर शरम विहार में स्थित अल-खैर फाउंडेशन के तहत संचालित अल-खैर पब्लिक स्कूल में स्वतंत्रता दिवस बड़े ही उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान से हुई, जिसके बाद छात्रों ने देशभक्ति से ओत-प्रोत भाषण, देशभक्ति गीत और आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किए, जिन्हें उपस्थित दर्शकों ने भरपूर सराहा। पूरे माहौल में देशप्रेम और एकता की भावना व्याप्त हो गई

इस अवसर पर शाहीन बाग की वार्ड काउंसलर और कांग्रेस नेता अरीबा आसिफ़ खान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम न केवल बच्चों की प्रतिभा को निखारते हैं बल्कि उनके दिलों में देशभक्ति की भावना को भी मजबूत करते हैं। साथ ही उन्होंने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला और अभिभावकों व शिक्षकों से अपील की कि वे बच्चों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दें।

स्कूल प्रशासन ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व न केवल हमारे इतिहास और कुर्बानियों की याद दिलाते हैं बल्कि छात्रों में देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे कार्यक्रम बच्चों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और राष्ट्रीय विरासत से जोड़ते हैं और उनमें एक जिम्मेदार नागरिक बनने की भावना जागृत करते हैं।कार्यक्रम के अंत में बच्चों के बीच खाने के पैकेट वितरित किए गए और कार्यक्रम दुआएं देकर समाप्त किया गया।

जन्माष्टमी के उपलक्ष पर फेडरेशन ने किया प्रसाद वितरण का आयोजन

मुख्य संवाददाता

दिल्लीः फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा की ओर से सदर बाजार के कुतुब रोड चौक पर कृष्ण जन्मोत्सव के पावन पर्व पर प्रसाद वितरण का आयोजन किया जिसमें फेडरेशन के अध्यक्ष राकेश यादव, उपाध्यक्ष रमेश सचदेवा, बड़ी मार्केट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, वरिंदर आर्य,सचिव अभय सभरवाल,शेखर गोगिया सहित अनेक व्यापारी नेता उपस्थित थे।

परमजीत सिंह पम्मा की जन्माष्टमी की बधाई न केवल एक धार्मिक अवसर को मनाने का एक तरीका है, बल्कि यह समाज में एकता और सौहार्द को बढ़ावा देने का भी एक अवसर है। उनके संदेश से लोगों को भगवान कृष्ण की शिक्षाओं को समझने और उनके जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है।

परमजीत सिंह पम्मा ने जन्माष्टमी के अवसर पर सभी को बधाई दी है। इस पावन अवसर पर, उन्होंने भगवान कृष्ण की शिक्षाओं को अपनाने और उनके आदर्शों पर चलने का संदेश दिया। परमजीत सिंह पम्मा के अनुसार, भगवान कृष्ण की शिक्षाएं हमें जीवन के सही मार्ग पर चलने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती हैं।

सर्व समाज राष्ट्रीय महासंघ के ध्वजारोहण कार्यक्रम में ली गई भाई चारे और देश भक्ति की शपथ

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राजधानी के विभिन्न क्षेत्रों में समाजसेवी संस्थाओं और राजनीतिक संगठनों द्वारा तिरंगा यात्राएं एवं ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी क्रम में सर्व समाज राष्ट्रीय महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ताहिर सिद्दीकी के नेतृत्व में अंसारी रोड, दरियागंज स्थित शबनम विला में ध्वजारोहण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में ऑल इंडिया इमाम ऑर्गनाइजेशन के चीफ़ इमाम डॉ. उमेर इलयासी, दरगाह हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के चीफ़ इंचार्ज सैयद काशिफ़ अली निजामी, पूर्व मंत्री दिल्ली सरकार व विधायक इमरान हुसैन, बंगला साहिब गुरुद्वारे के ग्रंथी परमजीत सिंह चंधोक, खान मार्केट एसोसिएशन के प्रमुख संजीव मेहरा, कैट के चेयरमैन सुशील गोयल तथा कैट के पदाधिकारी राजकुमार बिंदल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

इस मौक़े ताहिर सिद्दीक़ी ने कहा कि जिस तरह देश को आज़ाद कराने में सभी धर्म संप्रदाय के लोगों की भागीदारी रही उसी तरह देश के सम्पूर्ण विकास के लिए आपसी एकता बेहद जरूरी है।

ध्वजारोहण के पश्चात डॉ. उमेर इलयासी ने उपस्थित जनसमूह को एकता, भाईचारे और देशभक्ति की शपथ दिलाई। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें विभिन्न धर्मों एवं समुदायों के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और आपसी सौहार्द का संदेश दिया।

आयोजन की सफलता में डॉ. मुश्ताक अंसारी, नियाज़ मंसूरी, राहत खान, हाजी इरफ़ान कुरैशी, नवेद खान और मेहर चंद प्रेमी का विशेष योगदान रहा।

चंडीगढ़ सीनियर सिटीज़न्स एसोसिएशन ने देशभक्ति के उत्साह के साथ मनाया 79वां स्वतंत्रता

मुख्य संवाददाता

चंडीगढ़ सीनियर सिटीज़न्स एसोसिएशन (सीएससीए) ने सेक्टर-22 स्थित कम्युनिटी सेंटर में 79वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रेसिडेंट एस.सी. अग्रवाल,वाईस प्रेसिडेंट बृज सप्रा और जनरल सेक्रेटरी ओम कटारिया द्वारा स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने शहीद भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे महानायकों को याद किया, जिनके बलिदान और नेतृत्व ने राष्ट्र की आत्मा को प्रज्वलित किया और भारत को एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र बनाया — जो आज दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।

समारोह की औपचारिक शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. बी.सी. गुप्ता, आईएएस (सेवानिवृत्त) द्वारा ध्वजारोहण और राष्ट्रगान से हुई।

अपने संबोधन में डॉ. बी.सी. गुप्ता, चेयरमैन, सीनियर सिटीज़न्स एसोसिएशन चंडीगढ़ ने कहा कि भारत में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या वर्तमान में 15–16 करोड़ है, जो वर्ष 2050 तक बढ़कर 30 करोड़ तक पहुँच सकती है। उन्होंने इंटरनेशनल सीनियर सिटीजन्स डे की इंटरनेशनल थीम "एम्पोवेरिंग द एल्डरली पर्सन्स फ़ॉर एन इंक्लूसिव फ्यूचर" को भारत में अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि समाज और सरकार दोनों को वरिष्ठ नागरिकों को दैनिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल करना चाहिए। उन्होंने यह भी घोषणा की कि इंटरनेशनल सीनियर सिटीजन्स डे (21 अगस्त) और इंटरनेशनल डे ऑफ ओल्डर पर्सन्स (1 अक्टूबर) को एसोसिएशन द्वारा विशेष रूप से चिकित्सा संबंधी मुद्दों पर केंद्रित होकर मनाया जाएगा।

इस अवसर पर सुरिंदर वर्मा, अध्यक्ष सिटीज़न्स अवेयरनेस ग्रुप, जो अपना विवाह दिवस भी मना रहे थे, ने कहा कि आइए हम न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की उन मूलभूत बातों को निभाने का संकल्प दोहराएं जो हमारे संविधान में निहित हैं। स्वतंत्रता केवल एक उपहार नहीं बल्कि एक कर्तव्य है। हमें आशा, संकल्प और एकता के साथ आगे बढ़ना चाहिए और ऐसा राष्ट्र निर्माण करना चाहिए जो उन वीरों के सपनों के अनुरूप हो जिन्होंने इसके लिए संघर्ष किया।

कार्यक्रम के सांस्कृतिक चरण में आशा शर्मा, पुष्पा लता, सत्य पार्ती, रेखा शर्मा, राज किरण मल्होत्रा, उषा महाजन, कंचन लता, सतीश वर्मा, विनय और गीता गोयल ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर वातावरण को भावनाओं से ओत-प्रोत कर दिया।

कार्यक्रम का समापन मिठाई वितरण के साथ हुआ और वातावरण "भारत माता की जय" के नारों से गूंज उठा।

लखनऊ की तहज़ीब का जीवंत दस्तावेज़: अमृतलाल नागर

[किताब नहीं, पूरा संसार हैं अमृतलाल नागर की रचनाएँ]

अमृतलाल नागर, यह नाम हिंदी साहित्य में एक ऐसी धरोहर है, जो न केवल शब्दों की ताकत से बल्कि जीवन की गहरी समझ और इंसानी रिश्तों की बारीकियों से रची-बसी है। 17 अगस्त 1916 को आगरा की पवित्र मिट्टी में जन्मा यह साहित्यकार लखनऊ की गलियों में रच-बस गया, जहाँ उनकी कलम ने इंसानी जज़्बात, तवायफों की ठुमरियों की मिठास और समाज की कड़वी सच्चाइयों को शब्दों में पिरोया। उनकी रचनाएँ महज किताबों के पन्ने नहीं, बल्कि एक जीवंत संसार हैं, जहाँ हर पात्र, हर बोली, हर किस्सा साँस लेता है। नागर का बचपन साधारण था, मगर उनकी नज़र असाधारण। औपचारिक शिक्षा की डिग्रियाँ उनके पास नहीं थीं, पर जीवन का विश्वविद्यालय उनकी कक्षा था। लखनऊ की चाय की दुकानों, गलियों की गपशप और गंगा-जमुनी तहज़ीब ने उन्हें वह सबक सिखाया, जो कोई विश्वविद्यालय नहीं दे सकता। पत्रकारिता, फिल्म लेखन और साहित्य रचना, तीनों क्षेत्रों में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी।

'बूँद और समुद्र' उनकी कालजयी कृति है, जो सिर्फ़ एक उपन्यास नहीं, बल्कि इंसान और समाज के बीच की अनवरत जंग का दस्तावेज़ है। बूँद, एक व्यक्ति की छोटी-सी पहचान, उसके सपने और उसकी ज़िद—जब समुद्र जैसे विशाल, दबाव डालने वाले समाज से टकराती है, तो एक ऐसी कहानी जन्म लेती है जो हर दिल को छूती है। लखनऊ की तहज़ीब, वहाँ की सामाजिक जटिलताएँ और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ इस उपन्यास में इस तरह पिरोई गई हैं कि पाठक खुद को कहानी का हिस्सा महसूस करता है। यह उपन्यास हर उस शख्स की आवाज़ है, जो अपनी पहचान बचाने के लिए समाज की लहरों से लड़ता है।

'मानस का हंस' में नागर ने तुलसीदास को एक इंसान के रूप में जीवंत किया। यह उपन्यास तुलसी की जीवनी से कहीं बढ़कर है, यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो अपने समय की सामाजिक और व्यक्तिगत चुनौतियों से जूझता है। तुलसी यहाँ कोई मिथकीय संत नहीं, बल्कि एक इंसान हैं, जिनके दुख, भय, विश्वास और रचनात्मकता को नागर ने इतनी संवेदनशीलता से उकेरा कि पाठक उनके साथ एक गहरा रिश्ता जोड़ लेता है। यहाँ नागर की वह कला चमकती है, जो इतिहास और मिथक को इंसानी चेहरों में ढाल देती है।

'अमृत और विष' उनकी एक और मास्टरपीस है, जिसने 1967 में साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता। यह उपन्यास जीवन की दोहरी प्रकृति—सुख और दुख, अच्छाई और बुराई—को बारीकी से उजागर करता है। नागर के पात्र कभी एक आयामी नहीं होते। उनकी तवायफें, मजदूर, व्यापारी सबमें एक गहराई है, जो पाठक को सोचने पर मजबूर करती है। उनकी कहानियों में स्त्रियाँ खास तौर पर जीवंत हैं। तवायफें, जो उस दौर में

समाज की हेय दृष्टि का शिकार थीं, नागर की लेखनी में न केवल नाच-गाने की कला तक सीमित थीं, बल्कि उनकी भावनाएँ, उनके दुख और उनकी आकांक्षाएँ भी उतनी ही गहराई से उभरती थीं। 'नाच्यौ बहुत गोपाल' और 'खंजन नयन' जैसी रचनाएँ इस बात का सबूत हैं कि नागर समाज के हर तबके को अपनी लेखनी में जगह देते थे।

नागर की लेखनी में लखनऊ की गंगा-जमुनी तहज़ीब साँस लेती है। उनकी कहानियों में तवायफों की ठुमरियाँ, चायखानों की गपशप और सामाजिक ताने-बाने की बारीकियाँ जीवंत हो उठती हैं। उनकी रचनाएँ समाज की कुरीतियों, वर्ग-संघर्ष और मानवीय कमज़ोरियों पर सवाल उठाती थीं, मगर कभी उपदेशात्मक नहीं थीं। साहित्यकार रामविलास शर्मा ने ठीक ही कहा था कि नागर के पात्र लेखक पर हावी हो जाते हैं, और लेखक खुद को पात्रों के हवाले कर देता है। यही उनकी कहानियों की जीवंतता का राज़ है। उनकी रचनाएँ जैसे 'शतरंज के मोहरे' और 'बिखरे तिनके' में हास्य-व्यंग्य की वह शैली है, जो हँसाती भी है और गहरे सवाल छोड़ जाती है। श्रीलाल शुक्ल के तीखे व्यंग्य से अलग, नागर का व्यंग्य सहानुभूतिपूर्ण और मानवीय था।

उनकी रचनाओं का अनुवाद कई भाषाओं में हुआ, और उनकी ख्याति देश की सीमाओं को पार कर विदेशों तक पहुँची। 1981 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया, मगर उनका असली सम्मान लखनऊ की गलियों में बसा। वहाँ की बोली, वहाँ के लोग और वहाँ की संस्कृति उनकी रचनाओं में आज भी जीवित हैं। 23 फरवरी 1990 को उनका निधन हुआ, मगर उनकी कहानियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। वे नई पीढ़ी को सिखाती हैं कि साहित्य सिर्फ़ मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को समझने और बदलने का ज़रिया है।

नागर की लेखनी एक ऐसा दीया है, जो समाज के अंधेरे कोनों को रोशनी देता है। उनकी कहानियाँ हमें याद दिलाती हैं कि इंसानियत ही सबसे बड़ी ताकत है। उनकी जयंती पर, हम सिर्फ़ एक साहित्यकार को नहीं, बल्कि एक ऐसे दृष्टा को याद करते हैं, जिसने हिंदी साहित्य को आत्मा दी। अमृतलाल नागर आज भी हमारे बीच हैं—अपने शब्दों में, अपनी कहानियों में और उस लखनऊ में, जो उनकी रचनाओं में हमेशा जिंदा रहेगा। उनकी लेखनी हमें सिखाती है कि साहित्य केवल लिखा नहीं जाता, बल्कि जिया जाता है। और यही वह जादू है, जो अमृतलाल नागर को हिंदी साहित्य का अनमोल सितारा बनाता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

संगम विश्वविद्यालय में हर्षोल्लास से मनाया स्वतंत्रता दिवस

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा ,स्थानीय संगम विश्वविद्यालय में 79 वा स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया ।मुख्य अतिथि डॉ एस एन मोदानी,वाइस चेयरमैन संगम ग्रुप,कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने एनसीसी दल निरीक्षण करके झंडारोहण किया ।एनसीसी कैडेट के द्वारा मार्च पास्ट एवं गार्ड ऑफ होनर दिया गया। डॉ एस एन मोदानी ने उद्बोधन भाषण में सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी तथा कुलपति प्रोफेसर सक्सेना ने विश्वविद्यालय की उपलब्धियां को बताया ।इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन ,कार्य करने हेतु फैकल्टी,स्टाफ को परितोषित एवं सम्मानित किया गया ।छात्र छात्राओं द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यकम प्रस्तुत किए गए ।प्रो वीसी मानस रंजन पाणिग्रही ,कुलसचिव डॉ आलोक कुमार सहित समस्त फैकल्टी,स्टाफ,छात्र मोजूद थे ।लेफ्टिनेंट डा राजकुमार जैन ने बताया कि हर घर तिरंगा में विश्वविद्यालय के एनसीसी एनएसएस छात्रों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत तिरंगा रैली निकाली

भगवान श्रीकृष्ण ही पूर्ण परमात्मा : श्री चंचलापति दास वृन्दावन चंद्रोदय मंदिर में जन्माष्टमी का भव्य उत्सव

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन। भक्तिवेदांत स्वामी मार्ग स्थित वृन्दावन चंद्रोदय मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण दिवस जन्माष्टमी आध्यात्मिक उत्साह और दिव्य भक्ति भाव के साथ मनाया गया। मंदिर परिसर को भक्तों ने विभिन्न पुष्पों से सुसज्जित किया, जिससे पूरा वातावरण मनोहर हो उठा।

उत्सव के मुख्य आकर्षणों में लड्डू गोपाल अभिषेक, छप्पन भोग, विशेष पोशाक धारण, झूलन उत्सव, भजन संध्या और हरिनाम संकीर्तन शामिल रहे। वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच भगवान श्रीश्री राधा वृन्दावन चंद्र का महाभिषेक पंचगव्य (दूध, दही, घी, शहद, मिश्री), 108 प्रकार के फलों के रस, औषधियों और पुष्पों से किया गया। इस अवसर पर हरे-श्याम रंग के रेशमी और चांदी की कढ़ाईयुक्त वस्त्र पहनाए गए, वहीं निताई गौरांग को विशेष अलंकरण और पुष्पमालाओं से सजाया गया।

अटारी-वाघा बॉर्डर पर धूमधाम से मनाया गया 79वां स्वतंत्रता दिवस

अमृतसर अटारी, (साहिल बेरी)

देशभक्ति और उत्साह के माहौल में अटारी-वाघा बॉर्डर पर 79वां स्वतंत्रता दिवस बड़े ही जोश और गरिमा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सीमा सुरक्षा बल (BSF) के जवानों ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की ।कार्यक्रम में देशभक्ति गीतों, बैंड की प्रस्तुतियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने माहौल को भावुक और प्रेरणादायक बना दिया। BSF के जवानों के जोशीले मार्च पास्ट और परेड ने वहां मौजूद देशवासियों के दिलों में देशप्रेम की भावना को और प्रबल कर दिया ।स्थानीय नागरिकों के साथ-साथ देश-विदेश से आए सैकड़ों पर्यटकों ने भी इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनकर उत्सव में भागीदारी की। कार्यक्रम का समापन 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम' के गगनभेदी नारों के साथ हुआ

सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के सेवामुक्त सिख जजों से भी बेअदबी बिल के मसौदे में संशोधनों के लिए समिति कानूनी सुझाव ले: स. धालीवाल

अमृतसर/अजनाला, (साहिल बेरी)

हल्का विधायक और पूर्व कैबिनेट मंत्री पंजाब स. कुलदीप सिंह धालीवाल ने कहा कि पंजाब में पवित्र धार्मिक ग्रंथों की समाज-विरोधी/फिरकापरस्त तत्वों द्वारा एक साजिश के तहत पंजाब की शांति को भंग करने और सद्भावना को तोड़ने के नापाक मंसूबों को विफल करने तथा दोषियों को सख्त सजा देने के लिए मुख्यमंत्री पंजाब स. भगवंत सिंह मान और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक श्री अरविंद केजरीवाल की दूरदर्शिता से पंजाब विधानसभा के विशेष सत्र में पेश किए गए ₹बेअदबियों के खिलाफ अपराध रोकथाम बिल-2025₹ के मसौदे में संशोधनों के लिए सुझाव लेने हेतु भगवंत मान सरकार द्वारा डॉ. इंदरबीर सिंह निज्जर की अध्यक्षता में कांग्रेस, अकाली और भाजपा विधायकों की समिति गठित की गई है। उन्होंने (स. धालीवाल) ने सुझाव दिया है कि समिति विभिन्न धार्मिक, सामाजिक नेताओं और विश्वविद्यालयों/कॉलेजों के सिख विद्वानों से सुझाव लेने के साथ-साथ सुप्रीम कोर्ट और पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के विशेषज्ञ सिख जजों से भी संपर्क करके कानूनी सुझाव प्राप्त करे।

स. धालीवाल आज यहां शहर में अपने हल्का स्तरीय कार्यालय में लगाए गए खुले जनता दरबार में प्रभावित लोगों की समस्याएं सुनकर प्रशासन से मौके पर ही समाधान करवाकर राहत पहुंचाने के बाद बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पंजाब में सत्ता हासिल करने के लिए पूर्व कांग्रेस, अकाली और भाजपा सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के चलते पवित्र ग्रंथों की बेअदबी को रोकने के लिए कोई स्थायी कानून नहीं बनाया, जिसके परिणामस्वरूप पंजाब की सांप्रदायिक सद्भावना खतरे में पड़ गई।

स. धालीवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री स. भगवंत सिंह मान ने पिछले जुलाई में पंजाब विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब, गुटका साहिब, भगवद् गीता, बाइबल और कुरान आदि पवित्र ग्रंथों को नुकसान पहुंचाने या उकसाने वालों को कम से कम 10 साल की कैद और 10 लाख रुपये तक के जुर्माने की सजा का प्रावधान करते हुए ₹बेअदबियों के खिलाफ अपराध रोकथाम बिल-2025₹ पेश किया था। सरकार ने समिति को 6 महीने के भीतर संशोधित मसौदा सौंपने का निर्देश दिया है।

पूर्व मंत्री और विधायक स. धालीवाल ने सुप्रीम कोर्ट के नए फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि सजा पूरी कर चुके कैदियों को रिहा किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को 30-30 साल से जेलों में बंद बंदी सिखों को तुरंत रिहा करने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए।

इस मौके पर खुशपाल सिंह धालीवाल, डीएसपी गुरविंदर सिंह औलख, अतिरिक्त निगरानी इंजीनियर अनीस सिंह, कार्यालय सचिव गुरजंत सिंह सोही, ओएसडी चरणजीत सिंह सिद्धू, पीए मुख्तार सिंह बलड़वाल, एसएचओ अजनाला हरचंद सिंह संधू, एसएचओ झंडेर कमलप्रीत कौर, चेयरमैन बलदेव सिंह बब्बू, प्रधान भट्टी जसपाल सिंह ढिल्लों, शहरी प्रधान अमित औल आदि मौजूद थे।

डॉ. राजकुमार वेरका ने अमृतसर वेस्ट हलके में ध्वजारोहण कर दी आज़ादी के मतवालों को श्रद्धांजलि

अमृतसर, (साहिल बेरी)

अमृतसर वेस्ट हलके के नारायणगढ़ चौक स्थित इंडिया गेट में स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर पंजाब के पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. राजकुमार वेरका ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को नमन किया। इस मौके पर अमृतसर वेस्ट के सभी काउंसलर, ब्लॉक प्रधान, कांग्रेस कार्यकर्ता व क्षेत्र के गणमान्य लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान के साथ हुई और वातावरण देशभक्ति के नारों तथा गीतों से गूंज उठा।

ध्वजारोहण के उपरांत अपने संबोधन में डॉ. वेरका ने कहा — "यह दिन उन वीर शहीदों को याद करने का दिन है जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें आज़ादी दिलाई। देश की आज़ादी किसी एक नेता या आंदोलन की देन नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के संघर्ष और बलिदान का परिणाम है। हमें गर्व है कि हम एक स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं और हमारा कर्तव्य है कि हम इस आज़ादी की रक्षा करें, देश की एकता व अखंडता को बनाए रखें तथा समाज में भाईचारे और समानता की भावना को मज़बूत करें।"

डॉ. वेरका ने आगे कहा कि आज़ादी हमें केवल अधिकार ही नहीं देती बल्कि ज़िम्मेदारी भी सौंपती है। हमें अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा, युवाओं को रोज़गार और बुज़ुर्गों को सम्मानजनक जीवन देना होगा। यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी उन शहीदों के प्रति जिन्होंने अपने खून से आज़ादी का इतिहास लिखा।

इस मौके पर देशभक्ति के गीत गाए गए जिनमें बच्चों और युवाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पूरा माहौल तिरंगे रंगों से सजा और लोगों में जोश और उत्साह देखा गया। अंत में, डॉ. वेरका ने सभी नागरिकों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं और सभी से अपील की कि वे एकजुट होकर पंजाब और भारत की तरक्की में योगदान दें।

N.C.R.B (एन.सी.आर.बी)
I.I.F.-I (एकीकृत जाँच फार्म -I)

FIRST INFORMATION REPORT
(Under Section 173 B.N.S.S)
प्रथम सूचना रिपोर्ट
(धारा 173 बी एन एस एस के तहत)

1. District/Unit (जिला/इकाई): बदायूं
P.S. (थाना): सिविल लाइंस Year (वर्ष): 2025
FIR No.(प्र.सू.रि. सं.): 0371
Date &Time of FIR(प्र.सू.रि. की दिनांक/समय): 16/08/2025 01:42

2.

S.No. (क्र.सं.)	Acts (अधिनियम)	Sections (धारा(एँ))
1	भारतीय न्याय संहिता (बी एन एस), 2023	281
2	भारतीय न्याय संहिता (बी एन एस), 2023	325
3	पशुओं के प्रति क्रूरता का निवारण अधिनियम, 1960	11 (1) (I)
4	गौ हत्या निवारण अधिनियम उत्तर प्रदेश	5

3.(a) Occurrence of offence (अपराध की घटना) :

1. Day (दिन): शुक्रवार Date From (दिनांक से): 15/08/2025 Date To (दिनांक तक): 15/08/2025
Time Period (समय अवधि): पहर 7 Time From (समय से): 21:30 बजे Time To (समय तक): 21:30 बजे

पंजाब के ट्रक पर बदायूं के गौवंश को चोटिल करने पर f.i.r. दर्ज

मामला बदायूं शहर की स्थित मंडी समिति पुलिस चौकी के पास का मामले की थाना सिविल लाइन में f.i.r. दर्ज कराई।

पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने ट्रक का नम्बर PB12Y1881 तथा चालक का नाम तारसेम सिंह पुत्र सुरेन्द्र सिंह निवासी जनपद रोपड़ पर गाड़ी लापरवाही से हादसा होने से संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर कारवाही की मांग की।

श्री कृष्ण जन्मोत्सव पर सिविल डिफेंस ने पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर संभाली यातायात व्यवस्था

मथुरा:जिला अधिकारी मोहदय के आदेश अनुसार अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे राजेश यादव एवं उप नियंत्रक मुनेश कुमार गुप्ता चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल के नेतृत्व में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 5252 वा श्री कृष्ण जन्मोत्सव के अवसर पर नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा की ड्यूटी ठाकुर बाके बिहारी मंदिर वृंदावन एवं जन्मभूमि पर 80 वार्डन एवं स्वयंसेवक की ड्यूटी लगाई गई । सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं उनकी टीम के द्वारा मथुरा श्री कृष्ण जन्मोत्सव 2025 में आए माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था बनाने में पुलिस एवं प्रशासन के सहयोग करते नजर आए साथ ठाकुर बाके बिहारी मंदिर वृंदावन पर बाहर से आए हुए श्रद्धालुओं की सेवा करते नजर आए श्री कृष्ण जन्मोत्सव 2025 के अवसर पर सिविल डिफेंस मथुरा के डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर, पोस्ट वार्डन अशोक यादव, गिरीश वार्ष्णेय, सुनैना गुप्ता, शैली अग्रवाल, राम सैनी, नरेश अग्रवाल, शैलेश खण्डेलवाल, प्रमोद, मुकेश, पवन, हेमन्त, अरुण, शुभम, हरिनारायण, हेमलता, ज्योति, पिंकी शर्मा,देवेन्द्र, राजेंद्र, विक्रम, कौशिक, राम कुमार चौहान, विवेक,आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक ड्यूटी करते नजर आए।

संत घनश्याम दास ठाकुरजी महाराज का 90 वां त्रिदिवसीय जन्म महोत्सव 18 से 20 अगस्त तक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मदनमोहन घेरा स्थित श्रीराधा केलि कुंज (निकट श्री सनातन गोस्वामी समाधि मंदिर) में पूज्य संत घनश्याम दास ठाकुरजी महाराज का 90 वां त्रिदिवसीय जन्म महोत्सव दिनांक 18 से 20 अगस्त 2025 पर्यन्त अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत श्रीगोरीलाल कुंज के अध्यक्ष श्रीमहंत किशोर दास देवजू महाराज नित्य प्रति पूर्वाह्न 9:30 से मध्याह्न 12 बजे तक रासरस चर्चा पर प्रवचन करेंगे। इसके अलावा अपराह्न 04 से सायं 07 बजे तक निकुंज लीला का अत्यंत नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया जायेगा।

19 अगस्त को प्रातः 08 बजे से 09:30 बजे तक पूज्य संत घनश्याम ठाकुरजी महाराज की समाधि का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन एवं माल्यार्पण किया जायेगा।

20 अगस्त को मध्याह्न 12 बजे से पुरानी कालीदह रोड़ स्थित ठाकुरश्री अंतर्यामी मन्दिर में संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ महोत्सव का समापन होगा।

रासाचार्य स्वामी कुंज बिहारी शर्मा ने सभी भक्तों-श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में उपस्थित रहने का आग्रह किया है।

वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पंचामृत से हुआ उड़िया बाबा महाराज का महाभिषेक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। दावानल कुंड क्षेत्र स्थित श्रीकृष्णाश्रम (उड़िया बाबा आश्रम) में चल रहे ब्रज के प्रख्यात संत स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज के सप्तदिवसीय सार्धशताब्द (150 वें) प्राकट्योत्स में पूज्य महाराजश्री की प्रतिमा का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पंचामृत से महाभिषेक कर उनका पूजन-अर्चन किया गया।साथ ही भक्तों-श्रद्धालुओं के द्वारा उनकी आरती की गई।

तत्पश्चात सन्त-विद्वत सम्मेलन में श्रीउमाशक्ति पीठाधीश्वर स्वामी रामदेवानंद सरस्वती महाराज, सेवा मंगलम आश्रम के अध्यक्ष स्वामी गोविंदानंद तीर्थ, चार संप्रदाय आश्रम के महंत ब्रजबिहारी दास महाराज, महंत किशोरी शरण भक्तमाली, भागवताचार्य डॉ. रामविलास चतुर्वेदी, आचार्य बद्रीश महाराज, डॉ. शिव स्वरूप महाराज, गोविन्द कृष्ण पाठक, कृष्णदास महाराज (गोवर्धन), राम कुमार त्रिपाठी, वसन्त चतुर्वेदी एवं रमेशानंद महाराज आदि ने ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज के जीवन चरित्र का वर्णन कर सभी को भाव-विभोर कर दिया।संचालन संत सेवानंद ब्रह्मचारी ने किया।कार्यक्रम संयोजक व उड़िया बाबा आश्रम के प्रभारी आचार्य पंडित कुलदीप दुबे ने सभी संतों व विद्वानों को शॉल ओढ़कर एवं ठाकुरजी का पटका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके सम्मानित किया।

इससे पूर्व प्रख्यात रासाचार्य स्वामी ताराचंद ठाकुरजी के निर्देशन में गौरांग लीला का अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया गया।सायं को रासलीला की बहुत ही मनमोहक प्रस्तुति दी गई।

महोत्सव में याज्ञिक रत्न आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, सन्त प्रवर स्वामी आवेधानंद महाराज, विष्णुकांत शर्मा (आगरा), राम स्वरूप जोशी (मुंबई), विनोद तायल (देहरादून), हरीश अग्रवाल,अश्वनी प्रताप सिंह (नोएडा), रामस्वरूप जोशी, डॉ. राधाकांत शर्मा, विष्णु शर्मा, विजय पांडे, गौरव शर्मा (दिल्ली) आदि उपस्थित रहे।

विवेक रंजन अग्निहोत्री की द बंगाल फाइल्स का दमदार ट्रेलर हुआ रिलीज

विवेक रंजन अग्निहोत्री, अभिषेक अग्रवाल और पल्लवी जोशी द्वारा निर्मित द बंगाल फाइल्स का ट्रेलर रिलीज़ हो गया है और यह फुसफुसाता नहीं, बल्कि दहाड़ता है।

इस फिल्म का निर्देशन विवेक रंजन अग्निहोत्री ने किया है, जो द कश्मीर फाइल्स के पीछे के फिल्ममेकर हैं। यह नई फिल्म भारत की अब तक की सबसे साहसी फिल्म बनने का वादा करती है। अगर कश्मीर ने आपको झकझोर दिया, तो बंगाल आपको डराएगा!

पश्चिम बंगाल के खूनी और हिंसक राजनीतिक अतीत की पृष्ठभूमि में सेट, द बंगाल फाइल्स उन सवालों को उठाने की हिम्मत करती है, जिनका जवाब कोई देने की हिम्मत नहीं करता। सच्ची घटनाओं और डरावनी गवाहियों पर आधारित यह फिल्म उस क्रूर हिंदू नरसंहार को उजागर करती है, जिसे मेनसट्रीम की कहानियों ने लंबे समय तक दबाकर रखा। ट्रेलर के सबसे चौंकाने वाले पल में एक आवाज़ चुप्पी को तोड़ती है, "यह पश्चिम बंगाल है, यहाँ दो संविधान चलते हैं, एक हिंदुओं का, एक मुसलमानों का।" एक और किरदार सख्त इरादे के साथ कहता है, "सिर्फ जमीन का टुकड़ा नहीं, भारत का लाइट हाउस है बंगाल।"

दिल दहला देने वाले दृश्यों, डरावनी खामोशी और असरदार संवादों के जरिए, ट्रेलर दशकों की सांप्रदायिक हिंसा, चुप्पी और सोच बदलने की कोशिश पर रोशनी डालता है। फिल्म में नेशनल अवॉर्ड विजेता अभिनेत्री पल्लवी जोशी, सीनियर स्टार मिथुन चक्रवर्ती और एक शानदार कलाकारों की टीम है, जो उस कहानी में जान डालते हैं, जिसे कई लोग मिटाने की कोशिश कर चुके हैं।

विवेक रंजन अग्निहोत्री ने कहा, "द बंगाल फाइल्स एक चेतावनी है एक आवाज़ कि हम बंगाल को दूसरा कश्मीर नहीं बनने देंगे। हमने ट्रेलर को कोलकाता में लॉन्च करने का फैसला किया ताकि हिंदू नरसंहार की अब तक न बताई गई सच्चाई को सही तरीके से दिखाया जा सके और आप इसका एक झलक ट्रेलर में देखेंगे। देश को तैयार रहना चाहिए क्योंकि अगर कश्मीर ने आपको झकझोर दिया, तो बंगाल आपको डराएगा।" पल्लवी जोशी ने कहा, "हम समाज के सामने हकीकत का एक और पहलू पेश कर रहे हैं, कुछ ऐसा जो लोगों को सच में देखना चाहिए। द बंगाल फाइल्स का ट्रेलर दर्शकों को उस डरावनी सच्चाई के करीब लाने की कोशिश है, जिसे फिल्म दिखाएगी। इस फिल्म में हर अभिनय सच्चाई से आता है, जिससे कहानी और भी असरदार बनती है।

देश के पहले उन्नत चालक सहायता प्रणाली सेफ्टी फीचर वाले स्कूटर ओला एस1 प्रो स्पोर्ट में क्या हैं पांच खासियत

ओला एस1 प्रो स्पोर्ट भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों को लगातार बेहतर किया जा रहा है। इसी क्रम में देश की प्रमुख इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहन निर्माता ओला इलेक्ट्रिक की ओर से 15 अगस्त को ADAS सेफ्टी फीचर के साथ ओला एस1 प्रो स्पोर्ट स्कूटर लॉन्च किया गया है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर में क्या पांच खासियत दी गई हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए कई वाहन निर्माताओं की ओर से नए उत्पादों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। वहीं कुछ निर्माता अपने मौजूदा पोर्टफोलियो को और बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं। ओला इलेक्ट्रिक की ओर से भी ऑफर किए जाने वाले ओला एस1 प्रो के स्पोर्ट वर्जन को 15 अगस्त को लॉन्च किया है। इस स्कूटर को किस तरह की खासियत के साथ ऑफर किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

OLA S1 Pro Sport स्कूटर लॉन्च हुआ

ओला इलेक्ट्रिक की ओर से 15 अगस्त को ही अपने नए स्कूटर ओला एस1 प्रो स्पोर्ट स्कूटर को भारत में लॉन्च किया है। निर्माता की ओर से इस स्कूटर को अभी सिर्फ लॉन्च ही किया है, लेकिन इसकी डिलीवरी को कुछ समय बाद शुरू किया जाएगा।

क्या हैं पांच खासियत

ओला के नए एस1 प्रो स्पोर्ट इलेक्ट्रिक स्कूटर में निर्माता की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है।

निर्माता की ओर से इसे काफी स्पोर्टी डिजाइन के साथ पेश किया गया है। इसमें स्ट्रीट स्टाइल की फेयरिंग का उपयोग किया गया है।

इसके साथ ही इसमें कार्बन फाइबर का उपयोग किया गया है। जिससे यह स्कूटर वजन में कम हो जाता है।

इसमें ADAS जैसे सेफ्टी फीचर को भी दिया गया है। जिससे यह देश का पहला ऐसा स्कूटर बन गया है जिसमें ADAS जैसे सेफ्टी फीचर को दिया गया है।

इसके अलावा इसमें 5.2 kWh की क्षमता का बैटरी पैक दिया गया है जिसे फुल चार्ज के बाद 320 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

इसे भारत में 1.50 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। लेकिन इसकी डिलीवरी को जनवरी 2026 में शुरू किया जाएगा। फिलहाल इस स्कूटर को 999 रुपये में रिजर्व करवाया जा सकता है।

बाइक का इंजन ऑयल कब बदलें? अगर इन बातों पर ध्यान नहीं दिया तो हो सकता है भारी नुकसान, जानें पूरी डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

बाइक इंजन ऑयल भारत में बड़ी संख्या में लोग रोज के कामों को पूरा करने के लिए बाइक का उपयोग करते हैं। बाइक का इंजन सही तरह से काम करता रहे इसके लिए इंजन ऑयल काफी जरूरी होता है। अगर इंजन ऑयल खराब या कम हो जाए तो गंभीर नुकसान भी हो सकता है। इससे बचने के लिए कब इंजन ऑयल को बदलना चाहिए। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में लोग रोज के कामों को पूरा करने के लिए बाइक का उपयोग करते हैं। कई लोग बाइक का अच्छी तरह ध्यान रखते हैं तो कुछ लोग लापरवाही बरतते हैं। लापरवाही बरतने पर इंजन को भी नुकसान होता है। कई बार लोग इंजन ऑयल को बिना बदले और चेक किए भी चलाते हैं। लेकिन ऐसा करना कैसे नुकसान पहुंचा सकता है। इंजन ऑयल को कब बदलना (bike engine oil change) बेहतर रहता है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

लापरवाही से नुकसान

किसी भी बाइक में इंजन उसका सबसे जरूरी हिस्सा होता है। इंजन के लिए सबसे जरूरी इंजन ऑयल होता है। कई बार लोग इंजन और इंजन ऑयल को लेकर लापरवाही बरतते हैं। जिससे बाद में उनको भारी नुकसान हो जाता है।

मैनुअल बुक पढ़ना जरूरी

निर्माता की ओर से अपनी हर बाइक के साथ मैनुअल बुक या ई-मैनुअल बुक दी जाती है। बाइक की मैनुअल में हर बात की जानकारी के साथ ही यह भी जानकारी होती है कि किस बाइक में किस तरह के इंजन ऑयल का उपयोग करना चाहिए। साथ में यह भी जानकारी दी जाती है कि इंजन ऑयल को कब बदलना चाहिए। इसे पढ़कर आप इस बात की जानकारी ले सकते हैं कि इंजन ऑयल को कब बदलना सही होगा।

इंजन से आवाज

अगर आपकी बाइक को चलाते हुए इंजन से सामान्य से ज्यादा आवाज आने लगती है, तो ऐसी स्थिति में इंजन ऑयल को बदलना काफी जरूरी हो जाता है। जब भी बाइक में नया इंजन ऑयल डाला जाता है तो इंजन की आवाज काफी कम हो जाती है, लेकिन जब भी ऑयल खराब हो जाता है तो इंजन से आने वाली आवाज बढ़ने लगती है।

ओवरहीट होने पर भी चेक करें

अगर आपकी बाइक चलते हुए काफी तेजी से ओवरहीट होने लगती है, तो भी इस बात की संभावना होती है कि इंजन ऑयल खराब हो गया हो। इसके साथ ही यह भी खतरा होता है कि इंजन में ऑयल का स्तर काफी कम हो गया हो। ऐसा होने पर इंजन को नुकसान होने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए ऐसे संकेत मिलने पर इंजन ऑयल को चेक कर उसे बदल देना चाहिए।

टाटा सफारी, इनोवा, स्कॉर्पियो नहीं, बल्कि इस सस्ती 7-सीटर कार ने जुलाई में किया कमाल, टॉप-5 में शामिल हुई कौन सी कारें

सबसे ज़्यादा बिकने वाली 7 सीटर कारें भारत में हर महीने लाखों की संख्या में वाहनों की बिक्री की जाती है। जिनमें सात सीटों वाली कई कारों का भी योगदान होता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जुलाई महीने में कौन सी सात सीटों वाली कारों की सबसे ज्यादा बिक्री हुई है। Top-5 लिस्ट में कौन सी कारों को शामिल किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में हर महीने बड़ी संख्या में कारों की बिक्री की जाती है। कई सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली कारों में सात सीटों वाली कारों की भी मांग रहती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान देशभर में कौन सी सात सीटों वाली कारों की सबसे ज्यादा मांग रही है। Top-5 लिस्ट में कौन सी कारों को शामिल किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Suzuki Ertiga

मारुति सुजुकी की ओर से सात सीटों वाली कार के तौर पर मारुति अर्टिगा की बिक्री की जाती है। लंबे समय से इस गाड़ी की बाजार में काफी मांग है। रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान भी इसे सबसे ज्यादा पसंद किया गया है। जानकारी के मुताबिक बीते महीने के दौरान इस एमपीवी की 16604 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि इसके पहले 2024 में यह संख्या 15701 यूनिट्स की थी।

Mahindra Scorpio

महिंद्रा की ओर से भी स्कॉर्पियो को बाजार में सात सीटों के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान इस गाड़ी की 13747 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि 2024 में इसी अवधि में इसकी 12237 यूनिट्स की बिक्री हुई थी। महिंद्रा की ओर से स्कॉर्पियो ब्रॉन्ड के तहत क्लासिक और स्कॉर्पियो एन की बिक्री देशभर में की जाती है।

Toyota Innova

टोयोटा की ओर से इनोवा को भी सात सीटों के साथ ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी की बीते महीने के दौरान 9119 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। जबकि 2024 में यह संख्या 9912 यूनिट्स की थी। आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर इसकी बिक्री में आठ फीसदी की कमी दर्ज की गई है।

Kia Carens

किआ की ओर से भी कैरेंस को सात सीटों के विकल्प में ऑफर किया जाता है। निर्माता की ओर से इस एमपीवी की बीते महीने के दौरान 7602 यूनिट्स की बिक्री की गई है। 2024 में इसी अवधि के दौरान इसकी 5679 यूनिट्स की बिक्री की गई है। निर्माता ने इसी साल इसके क्लाविस वर्जन को बाजार में लॉन्च किया है।

Mahindra Bolero

महिंद्रा की ओर से बोलेरो को भी सात सीटों के विकल्प के साथ बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बीते महीने के दौरान इस गाड़ी की 7513 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। जबकि 2024 में यह संख्या 6930 यूनिट्स की थी।

एमजी विंडसर ईवी के बेस वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद जाएगी कितनी ईएमआई

कार वित्त योजना एमजी मोटर्स भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करती है। निर्माता की ओर से MG Windsor EV की भी बिक्री की जाती है। इस ईवी के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं तो सिर्फ दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली MG Windsor EV को भी बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। अगर आप भी इसे खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Windsor EV Price

एमजी मोटर्स की ओर से Windsor EV के बेस वेरिएंट को 13.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। इसे दिल्ली में खरीदने पर ऑन रोड कीमत करीब 14.94 लाख रुपये हो जाती है। इस कीमत में 13.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के अलावा करीब 6300 रुपये आरटीओ और इंश्योरेंस के करीब 73 हजार रुपये देने होंगे। इसके अलावा इसके लिए टीसीएस चार्ज के 14700 रुपये देने होंगे। जिसके बाद इसकी ऑन रोड कीमत 14.94 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 12.94 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 12.94 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 20820 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 12.94 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 20820 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप MG Windsor EV के लिए करीब 4.55 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आप कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 19.49 लाख रुपये देंगे।

किनसे होगा मुकाबला

JSW MG की ओर से Windsor EV को इलेक्ट्रिक गाड़ी के तौर पर लाया जाता है। बाजार में इसे कई एसयूवी से चुनौती मिलती है, लेकिन इसका सीधा मुकाबला Tata Curvv EV, Mahindra BE6 जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी के साथ होता है।

विनफास्ट लिमो ग्रीन इलेक्ट्रिक एमपीवी आ सकती है भारत, कैसे हैं फीचर्स और कितनी होगी रेंज

विनफास्ट लिमो ग्रीन वियतनाम की वाहन निर्माता विनफास्ट की ओर से भारत में जल्द ही अपनी कारों को लॉन्च किया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से VF6 और VF7 के अलावा एक और गाड़ी को लाने की तैयारी की जा रही है। इसे किस सेगमेंट में लाया जाएगा। किस तरह के फीचर्स और रेंज के साथ इसे लॉन्च किया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए कई निर्माता भारत में अपनी कारों को पेश और लॉन्च कर रहे हैं। वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता विनफास्ट भी जल्द ही अपनी दो एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी में है। इसके अलावा निर्माता और किस गाड़ी को भारत में लॉन्च कर सकती है। इसमें कैसे फीचर्स और रेंज को ऑफर किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Vinfast लाएगी तीसरी गाड़ी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक विनफास्ट की ओर से भारत में तीसरी गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी के लिए पेटेंट को भारत में फाइल कर दिया गया है।

किस गाड़ी को करेगी लॉन्च

जानकारी के मुताबिक निर्माता की ओर से Vinfast Limo Green इलेक्ट्रिक एमपीवी को भारत में लॉन्च किया जा सकता है। इस इलेक्ट्रिक एमपीवी को कमर्शियल वाहन के तौर पर देश में लॉन्च किया जा सकता है।

कैसे होंगे फीचर्स

निर्माता की ओर से लीमो ग्रीन इलेक्ट्रिक एमपीवी को सात सीटों वाली इलेक्ट्रिक एमपीवी के तौर पर लाया जाएगा। इसमें एलईडी डीआरएल, एलईडी लाइट्स, 18 इंच अलॉय व्हील्स, 170 एमएम ग्राउंड क्लियरेंस, 10.1 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, चार स्पीकर, सिंगल जोन एसी, एयरबैग, एबीएस, ईबीडी जैसे कुछ फीचर्स को शामिल किया जाएगा। इसका इंटीरियर भी ब्लैक थीम पर हो सकता है।

कितनी होगी रेंज

विनफास्ट की ओर से इस सात सीटों वाली इलेक्ट्रिक एमपीवी में 60.13 kWh की क्षमता की एलएफपी बैटरी को दिया जाएगा। जिसे सिंगल चार्ज में 450 किलोमीटर तक की रेंज मिल सकती है। यह डीसी फास्ट चार्जर से 10 से 70 फीसदी तक सिर्फ 30 मिनट में चार्ज हो जाएगी। इस एमपीवी में ड्राइविंग के लिए ईको, कम्फर्ट और स्पोर्ट्स मोड को दिया जाएगा।

किनसे होगा मुकाबला

विनफास्ट की ओर से लीमो ग्रीन इलेक्ट्रिक एमपीवी को भारत में कमर्शियल वाहन सेगमेंट में ऑफर किया जा सकता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला BYD eMax के साथ होगा।

कब होगी लॉन्च

विनफास्ट की ओर से अभी इस बारे में कोई औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस सात सीटों वाली इलेक्ट्रिक एमपीवी को भारत में 2026 तक लॉन्च किया जा सकता है।

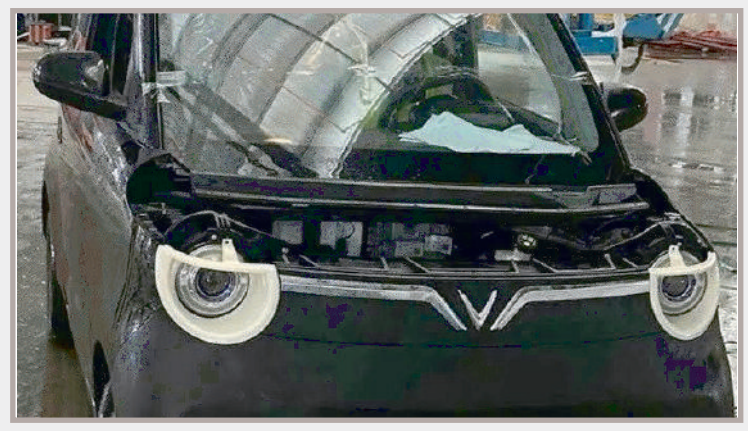

एक युग का अंत: भारत मेल डिलीवरी के 50 वर्षों के लिए विदाई देता है

विजय गर्ग

पीढ़ियों से, खाकी में एक डाकिया का दृश्य, कैनवास बैग उसके कंधे के पार चला गया, भारत के सामाजिक और भावनात्मक कपड़े का एक परिचित हिस्सा था। वह एक कूरियर से अधिक था - वह समाचार का वाहक था, खुशी का दूत था, और कई बार, दुख ले जाने वाला एक मूक दिलासा देने वाला। दरवाजे पर दस्तक का मतलब एक लंबे समय से प्रतीक्षित नौकरी की पेशकश, एक अदालत के सम्मन, एक शादी का निमंत्रण, या एक प्यार एक तैनात मील दूर से एक पत्र हो सकता है ।1 सितंबर, 2025 को, यह दस्तक आधिकारिक तौर पर इतिहास में फीका पड़ जाएगी क्योंकि इंडिया पोस्ट अपनी आधी सदी पुरानी पंजीकृत पोस्ट सेवा को बंद कर देता है, इसे आधुनिकीकरण अभियान के हिस्से के रूप में स्पीड पोस्ट में विलय कर देता है।

यह कदम एक परिचालन परिवर्तन से अधिक है; यह एक युग का प्रतीकात्मक अंत है, हस्तलिखित पत्रों के शांत पीछे हटने, भूरे रंग के लिफाफे में कानूनी नोटिस और रोजमर्रा के भारतीय जीवन से अंतर्देशीय कार्ड का संकेत है। यह भारत पोस्ट के पारंपरिक मेल वाहक से आधुनिक लॉजिस्टिक्स और डिजिटल सेवा प्रदाता में परिवर्तन के लिए एक निर्णायक कदम है। लेकिन लाखों लोगों के लिए, विशेष रूप से ग्रामीण भारत में, यह एक ऐसी संस्था को अलविदा भी है जिसने दशकों तक संचार को परिभाषित किया है।

50 साल की परंपरा का अंत

पांच दशकों से अधिक समय से चालू पंजीकृत पोस्ट सेवा भारत में सुरक्षित, कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त पत्राचार की आधारशिला रही है। ब्रिटिश औपनिवेशिक युग के दौरान पेश किया गया और स्वतंत्रता के बाद जारी रहा, यह महत्वपूर्ण दस्तावेज भेजने के लिए पसंदीदा साधन बन गया जिसमें पोस्टिंग और डिलीवरी के प्रमाण की आवश्यकता थी। न्यायालय, सरकारी कार्यालय, बैंक, विश्वविद्यालय और सामान्य नागरिक संचार के लिए इस पर निर्भर थे जिनके कानूनी वजन विवाद से परे होने की आवश्यकता थी। डाकघर से एक मुहर लगी रसीद अदालत में स्वीकार्य साक्ष्य के रूप में काम कर सकती है, और प्रेषक को लौटाया गया पावती कार्ड वितरण का ठोस प्रमाण था।

नौकरी की पेशकश पत्र से लेकर कानूनी नोटिस तक, विश्वविद्यालय के प्रवेश से लेकर सरकारी आदेशों तक, पंजीकृत डाक को देश के प्रशासनिक और व्यक्तिगत जीवन में बुना गया था। सस्ती और विश्वसनीय, छोटे व्यापारियों और किसानों के लिए भी पहुंच के भीतर इसकी कीमत 25.96 रुपये से अधिक 5 रुपये प्रति अतिरिक्त 20 ग्राम है। उन गांवों में जहां निजी कोरियर शायद ही कभी उद्यम करते थे, सेवा अपरिहार्य थी।

लेकिन संख्या पिछले एक दशक में एक अलग कहानी बताती है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2011-12 में 244.4 मिलियन लेखों से 25% तक पंजीकृत मेल वॉल्यूम 2019-20 में सिर्फ 184.6 मिलियन तक। डिजिटल गोद लेने, निजी कूरियर कंपनियों के प्रसार, और ई-कॉमर्स लॉजिस्टिक्स के उदय ने इस गिरावट में योगदान दिया है। COVID-19 महामारी ने

बदलाव को तेज कर दिया क्योंकि सरकारी संचार भी एसएमएस, ईमेल और समर्पित पोर्टल्स में चले गए।

स्पीड पोस्ट के साथ विलय क्यों ?

1986 में लॉन्च किया गया स्पीड पोस्ट, डिलीवरी की मांगों को व्यक्त करने के लिए इंडिया पोस्ट का जवाब था। समय के साथ, यह एक तेज, अधिक ट्रैक करने योग्य और अधिक तकनीकी रूप से एकीकृत सेवा में विकसित हुआ। डाक विभाग के सचिव और महानिदेशक ने हाल ही में घोषणा की कि 1 सितंबर, 2025 से, सभी पंजीकृत डाक सेवाओं को स्पीड पोस्ट में समेकित किया जाएगा।

आधिकारिक तर्क परिचालन दक्षता में सुधार करना, ट्रैकिंग सटीकता को बढ़ाना और बुनियादी ढांचे के दोहराव को कम करना है। स्पीड पोस्ट पहले से ही उन्नत ट्रैकिंग सिस्टम के साथ एकीकृत है, जो प्रेषकों और प्राप्तकर्ताओं को निकट-वास्तविक समय अपडेट प्रदान करता है - कुछ पारंपरिक पंजीकृत पोस्ट तत्काल सूचनाओं की आयु में पूरी तरह से वितरित नहीं कर सकते हैं। यह विलय इंडिया पोस्ट की व्यापक आईटी 2.0 पहल के साथ भी संरेखित करता है, जिसका उद्देश्य उन्नत डाक प्रौद्योगिकी (एपीटी) आवेदन के साथ 1.64 लाख से अधिक डाकघरों के अपने विशाल नेटवर्क को ओवरहाल करना है।

एपीटी का रोलआउट, हालांकि शुरू में 4 अगस्त, 2025 को अपने राष्ट्रव्यापी लॉन्च के दौरान तकनीकी गड़बड़ियों से धीमा हो गया था, पहले ही 20 लाख से अधिक बुकिंग संसाधित कर चुका है और एक ही दिन में 25 लाख से अधिक लेख वितरित कर चुका है। अधिकारियों का मानना है कि इस तरह के डिजिटल बुनियादी ढांचे से इंडिया पोस्ट को तेजी से बदलते संचार और रसद पारिस्थितिकी तंत्र में प्रासंगिक बने रहने में मदद मिलेगी।

अफोर्डेबिलिटी डिबेट

फिर भी, संक्रमण चिंताओं के बिना नहीं है। पंजीकृत पोस्ट सस्ता था, जिससे यह ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए सुलभ था। स्पीड पोस्ट, जबकि तेज, 50 ग्राम तक के लिए 41 रुपये से शुरू होता है - लगभग 20-25% अधिक महंगा। शहरी पेशेवरों या सरकारी कार्यालयों के लिए, अंतर नगण्य है, लेकिन ग्रामीण भारत में, जहां डाकघर अभी भी कई सेवाओं के लिए संपर्क के प्राथमिक बिंदु के रूप में दोगुना है, वृद्धि महत्वपूर्ण हो सकती है।

छोटे व्यापारी, किसान और दूरदराज के क्षेत्रों में नागरिक अक्सर न केवल कानूनी या आधिकारिक दस्तावेजों के लिए पंजीकृत पोस्ट का उपयोग करते हैं, बल्कि व्यक्तिगत पत्राचार के लिए भी जहां वितरण का प्रमाण महत्वपूर्ण है। आलोचकों को चिंता है कि मूल्य अंतर एक संचार अंतर पैदा कर सकता है, असंगत रूप से डिजिटल साक्षरता या पहुंच के बिना उन लोगों को प्रभावित कर सकता है।

अधिकारी काउंटर करते हैं कि एक ऐसे युग में जहां अधिकांश संचार डिजिटल हो गया है, ऐसे मामलों की मात्रा सिकुड़ रही है। उनका तर्क है कि दो समानांतर प्रणालियों को बनाए रखना - पंजीकृत पोस्ट और स्पीड पोस्ट - अब लागत प्रभावी नहीं है, विशेष रूप से गिरते उपयोग को देखते हुए।

ट्रस्ट और अनुष्ठान में निहित एक सेवा

पंजीकृत पोस्ट का महत्व हमेशा लेन-देन से अधिक रहा है। यह एक सांस्कृतिक अनुष्ठान था। प्रेषक लिफाफे को सावधानीपूर्वक तैयार करेगा, डाकघर में कतार लगाएगा, और जुर्माना की भावना के साथ मुहर लगी रसीद प्राप्त करेगा। कुछ दिनों बाद, ग्रीन पावती कार्ड वापस आ जाएगा, प्राप्तकर्ता के हस्ताक्षर असर-सबूत है कि संदेश अपने गंतव्य तक पहुंच गया था।

इस अनुष्ठान ने ग्रामीण क्षेत्रों में भावनात्मक वजन बढ़ाया जहां डाकिया एक सम्मानित व्यक्ति था। गांवों में, डाकिया अक्सर अनपढ़ प्राप्तकर्ताओं को पत्र पढ़ते हैं, फॉर्म भरते हैं, या आधिकारिक नोटिस समझाते हैं। वे समुदाय के सदस्य थे, कभी-कभी विवादों में मध्यस्थ भी थे जो उनके द्वारा दिए गए पत्रों से उत्पन्न हुए थे। टेलीफोन के आम होने से पहले के वर्षों में, डाकिया दूर-दराज के परिवारों के बीच एकल सबसे महत्वपूर्ण मानव संबंध था।

हस्तलिखित पत्र केवल संचार का एक माध्यम नहीं थे; वे अंतरंगता और धैर्य की वस्तुएं थीं। एक पत्र का आगमन दिनों के लिए मूड उठा सकता है, इसकी सामग्री पढ़ी और फिर से पढ़ी जा सकती है, न केवल शब्दों को ले जाने वाला पेपर बल्कि प्रेषक के घर या कार्यस्थल की खुशबू।

प्रौद्योगिकी के अथक मार्च

आज के भारत में, स्मार्टफोन और इंटरनेट एक्सेस ने संदेश भेजने और प्राप्त करने के बीच लंबे इंतजार को मिटा दिया है। व्हाट्सएप, ईमेल और सोशल मीडिया परिवारों को दैनिक बोलने, तुरंत तस्वीरें साझा करने और मिनटों में मामलों को निपटाने की अनुमति देते हैं। अंतर्देशीय पत्र, एरोग्राम और मनी ऑर्डर काफी हद तक गायब हो गए हैं। यहां तक कि सैनिक, एक बार पूरी तरह से पत्रों पर निर्भर थे, अब वीडियो कॉल के माध्यम से संवाद करते हैं।

भौतिक पत्र की गिरावट भारत के लिए अद्वितीय नहीं है - यह एक वैश्विक घटना है। यूके में, रॉयल मेल ने ई-कॉमर्स के लिए पार्सल वितरण की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया है, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में, यूएसपीएस खुद को बनाए रखने के लिए पैकेज और बल्क मेल पर भारी निर्भर करता है।

इंडिया पोस्ट, भी, विविध रहा है। मेल डिलीवरी से परे, यह अब इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक संचालित करता है, आधार अपडेट प्रदान करता है, लॉजिस्टिक्स सेवाएं चलाता है, और ग्रामीण डिजिटल आउटरीच का समर्थन करता है। स्पीड पोस्ट में पंजीकृत पोस्ट का विलय इस बदलाव का हिस्सा है, यह सुनिश्चित करना कि संसाधनों को वर्तमान मांगों से मेल खाने वाली सेवाओं की ओर प्रसारित किया जाए।

शांत विदाई

पंजीकृत पोस्ट सेवा की औपचारिक वापसी अचानक निर्णय नहीं है; यह एक धीमी, दशकों लंबी गिरावट की परिणति है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक मेल डिलीवरी की आवृत्ति सप्ताह में एक बार या उससे कम हो गई है। सिस्टम को बनाए रखने की परिचालन लागत रिटर्न को कम करती है, और ऐसी दुनिया में जहां सरकारी नोटिस भी ईमेल के माध्यम से आते हैं, विरासत प्रणाली को बनाए रखने का तर्क बचाव करना कठिन हो जाता है।

फिर भी, जो लोग पूर्व-डिजिटल युग में बड़े हुए हैं, उनके लिए यह एक बजटीय या परिचालन मामले से अधिक है। यह भारत की सांस्कृतिक स्मृति में एक अध्याय का अंत है। खाकी पहने हुए डाकिया, पोस्ट बॉक्स लाल रंग से रंगा हुआ, राज्यों में एक पत्र की धीमी लेकिन निश्चित यात्रा - ये ऐसी छवियां हैं जो दूसरी बार की हैं।

हम संक्रमण में क्या खो देते हैं

प्रगति अनुकूलन की मांग करती है, लेकिन इसके साथ कुछ मानव अनुभवों का एक शांत क्षरण आता है। पंजीकृत पोस्ट के अंत का अर्थ है कई लोगों के लिए स्पर्श, जानबूझकर संचार का अंत। पत्रों ने हमें लिखने से पहले सोचने के लिए मजबूर किया, हमारे शब्दों को ध्यान से चुनने के लिए, यह जानते हुए कि उन्हें पढ़ा जाएगा और शायद संरक्षित किया जाएगा। उन्होंने गहनता का वजन बढ़ाया - डिजिटल संदेशों के तेजी से आग के आदान-प्रदान में अक्सर कुछ खो जाता है।

स्पीड पोस्ट में बदलाव यह सुनिश्चित करता है कि इंडिया पोस्ट प्रतिस्पर्धी, तकनीकी रूप से अपडेट और परिचालन रूप से दुबला रहे। लेकिन इसका मतलब यह भी है कि डाकिया की दस्तक - प्रत्याशा के क्षण में एक बार - एक वितरण अधिसूचना के अवैयक्तिक पिंग द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

समय में, स्पीड पोस्ट स्वयं मान्यता से परे विकसित हो सकता है, शायद ड्रोन डिलीवरी या एआई-प्रबंधित लॉजिस्टिक्स में विलय हो सकता है। लेकिन अभी के लिए, जैसा कि पंजीकृत पोस्ट चुपचाप अपने तेज भाई-बहन में अवशोषित हो जाता है, हम उस युग को याद करने के लिए रुकते हैं जब एक पत्र की यात्रा विश्वास, धैर्य और मानव संबंध का कार्य थी।

डाकिया अब दो बार दस्तक नहीं देगा। लेकिन उन लोगों के लिए जो कभी उस ध्वनि के लिए दरवाजे से इंतजार करते थे, उनकी स्मृति कभी भी फीकी नहीं पड़ेगी।

डॉ. विक्रम अंबालाल साराभाई जैन भारत के एक महान वैज्ञानिक थे

विजय गर्ग

विक्रम अंबालाल साराभाई जैन भारत के एक महान वैज्ञानिक थे। उन्हें भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का पितामह माना जाता है। उनमें वैज्ञानिक, प्रवर्तक, उद्योगपति तथा दिव्यदर्शनद्रष्टा के विरल गुण थे। विक्रम साराभाई जैन का जन्म अगस्त 12, 1919 को अहमदाबाद के प्रगतिशील उद्योगपति के संपन्न परिवार में हुआ था। वे अंबालाल व सरला देवी के आठ बच्चों में से एक थे। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा मोंटेसरी लाइन के निजी स्कुल 'रिट्रीट' से प्राप्त की, जो उनके मातापिता चला रहे थे। कुछ महान व्यक्तित्व जैसे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ, जे कृष्णामूर्ति, मोतीलाल नेहरु, वी.एस. श्रीनिवास शास्त्री, जवाहरलाल नेहरु, सरोजनी नायडू, मौलाना आजाद, सी एफ एड्रूज, सी.वी. रमन आदि, जब अहमदाबाद आते थे, तब साराभाई परिवार के साथ रहते थे। बीमारी से ठीक होने के दौरान महात्मा गाँधी भी एक बार उन के घर में रहे थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के सानिध्य ने विक्रम साराभाई को बहुत ही प्रभावित किया था।

विक्रम साराभाई जैन मेट्रिक्युलेशन के बाद, कालेज शिक्षण, के लिए केब्रिडज चले गये तथा वर्ष 1940 में सेंट जान कालेज से प्राकृतिक विज्ञान में ट्राइपोस किया। द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में वे घर वापस आये तथा भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलूरु में सर सी.वी. रमन के अधीन अनुसंधान छात्र के रुप में कार्य ग्रहण किया। उनके सौर भौतिकशास्त्र व कास्मिक किरण में रुचि के कारण, उन्होंने देश में कई प्रेक्षण स्टेशनों को स्थापित किया। उन्होंने आवश्यक उपकरणों का निर्माण किया तथा बैंगलूरु, पुणे व हिमालयों में मापन किया। वे 1945 में केब्रिडज वापस गए तथा 1947 में उन्होंने विद्या वाचस्पति (पीएचडी) की शिक्षा पूर्ण की। घर वापस आने के बाद वर्ष 1947 नंवबर में अहमदाबाद में भौतिकी अनुसंधान प्रयोगशाला की स्थापना की। उनके माता पिता के द्वारा स्थापित अहमदाबाद एजुकेशन सोसाइटी के एम.जी विज्ञान संस्थान के कुछ कमरों में प्रयोगशाला को स्थापित किया गया। तदनंतर वैज्ञानिक व औद्योगिकी अनुसंधान परिषद (सी एस आई आर) तथा परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा समर्थन भी मिला।

विक्रम साराभाई जैन ने कास्मिक किरणों के समय परिवर्तन पर अनुसंधान किया और निष्कर्ष किया कि मौसम विज्ञान परिणाम कास्मिक किरण के दैनिक परिवर्तन प्रेक्षण पर पूर्ण रुप से प्रभावित नहीं होगा। आगे, बताया कि अवशिष्ट परिवर्तन विस्तृत तथा विश्वव्यापी है तथा यह सौर क्रियाकलापों के परिवर्तन से संबंधित है। विक्रम साराभाई ने सौर तथा अंतरग्रहीय भौतिकी में अनुसंधान के नए क्षेत्रों के सुअवसरों की कल्पना की थी।

वर्ष 1957-1958 को अंतर्राष्ट्रीय भू-भौतिकी वर्ष के रुप में देखा जाता है। साराभाई द्वारा आईजीडबयु के लिए भारतीय कार्यक्रम एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1957 में स्पुटनिक-1 के प्रमोचन ने उनको अंतरिक्ष विज्ञान के नये परिदृश्यों से अवगत कराया। तदनंतर, उनकी अध्यक्षता में अंतरिक्ष अनुसंधान हेतु भारतीय राष्ट्रीय समिति का गठन किया गया। थुम्बा का विशेष नक्शा कि वह भू-चुबंकीय मध्यरेखा के निकट है को देखते हुए विक्रम साराभाई ने तिरुअनंतपुरम के पास अरबी तट पर स्थित एक मछुवाही गॉव थुम्बा में देश के प्रथम राकेट प्रमोचन स्टेशन, थुम्बा भू-मध्य रेखीय राकेट प्रमोचन स्टेशन की स्थापना का चयन किया।इस साहस में, उनको होमी भाभा जो उस समय परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष थे से सक्रिय सहयोग मिला था। नवंबर 21, 1963 को सोडियम वाष्प नीतभार के साथ प्रथम राकेट का प्रमोचन किया गया। संयुक्त राष्ट्र महा सभा ने 1965 में, टीईआरअलैएस को एक अंतर्राष्ट्रीय सुविधा के रुप में मान्यता दी।

विमान दुर्घटना में होमी भाभा के अकालिक मृत्यु के बाद, विक्रम साराभाई जैन ने मई 1966 में परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष पद को संभाला। वे हमेशा से यह चाहते थे कि विज्ञान के प्रायोगिक उपयोग आम आदमी तक पहुँचे। उन्होंने राष्ट्र के वास्तविक संसाधन की तकनीकी तथा आर्थिक मूल्यांकन के आधार पर देश की समस्याओं के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी में सक्षमता प्राप्त करने की दिशा में कार्य किया। उन्होंने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत की, जो आज पूरे विश्व में विख्यात है।

डॉ. विक्रम साराभाई ने 1962 में शांति स्वरुप भटनागर पदक प्राप्त किया। राष्ट्र ने वर्ष 1966 में पद्म भूषण तथा वर्ष 1972 में पद्म विभूषण (मृत्योपरांत) से सम्मानित किया।

स्वतंत्रता के बाद से स्टेम शिक्षा में महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी यात्रा

विजय गर्ग

अपनी स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने स्टेम शिक्षा में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी यात्रा शुरू कर दी है। पिछले 78 वर्षों में, इस यात्रा को सुधारों और नीतियों की एक श्रृंखला द्वारा चिह्नित किया गया है जिसका उद्देश्य राष्ट्र के विकास के लिए एक मजबूत वैज्ञानिक और तकनीकी नींव का निर्माण करना है। यहाँ प्रमुख मील के पत्थर और प्रमुख विषयों पर एक नज़र है जिन्होंने इस मार्ग को आकार दिया है: प्रारंभिक वर्ष: फाउंडेशन एंड इंस्टीट्यूशन बिल्डिंग (1947-1960)

एक वैज्ञानिक कार्यबल की आवश्यकता की मान्यता: स्वतंत्रता के बाद के नेताओं, विशेष रूप से जवाहरलाल नेहरू, ने माना कि गरीबी, अशिक्षा और खराब बुनियादी ढांचे को संबोधित करने के लिए एक मजबूत वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा प्रणाली महत्वपूर्ण थी। इस दृष्टि ने भविष्य की शैक्षिक पहल के लिए आधार बनाया।

प्रमुख संस्थानों की स्थापना: इस अवधि में उच्च शिक्षा और अनुसंधान पर केंद्रित विश्व स्तरीय संस्थानों का निर्माण देखा गया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी): पहला आईआईटी 1951 में खड़गपुर में स्थापित किया गया था, इसके बाद अन्य लोग इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के लिए उत्कृष्टता केंद्र बनाने के लक्ष्य के साथ।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49): डॉ। सर्वपल्ली राधाकृष्णन, इस आयोग ने पाठ्यक्रमों के पुनर्गठन और उच्च शिक्षा में मानकों में सुधार के लिए मूल्यवान सिफारिशें कीं।

समन्वय और योजना पर ध्यान दें: सरकार ने 1950 में पांच साल की योजनाएं बनाने के लिए योजना आयोग का गठन किया जिसमें शिक्षा को एक प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया गया था। सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने, अशिक्षा को समाप्त करने और विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों पर विशेष जोर देने के साथ शिक्षा के आधुनिकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया था। व्यापक समीक्षा और नीति निर्माण का युग (1960s-1980s)

कोठारी आयोग (1964-66): यह आयोग एक महत्वपूर्ण क्षण था, क्योंकि इसने शिक्षा के पूरे क्षेत्र की व्यापक समीक्षा प्रदान की। इसकी सिफारिशों के कारण 1968 में पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) हुई। आयोग ने जोर दिया:

शिक्षा के सभी चरणों के लिए एक राष्ट्रीय पैटर्न विकसित करना।

राष्ट्रीय आय का 6% तक शिक्षा खर्च बढ़ाना।

समान शैक्षिक अवसरों को बढ़ावा देना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020: यह सबसे हालिया और दूरगामी सुधार है, जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से ओवरहाल करना है। यह रटने के संस्मरण से एक अधिक समग्र, आवेदन-आधारित दृष्टिकोण में एक प्रमुख बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। मुख्य विशेषताओं में शामिल हैं:

एक नया पाठ्यक्रम संरचना: कम उम्र से समग्र सीखने को बढ़ावा देने के लिए कठोर 10 + 2 प्रणाली को 5 + 3 + 3 + 4 संरचना के साथ बदल दिया गया है।

अनुभवात्मक और अंत:विषय सीखने: नीति परियोजना-आधारित आकलन और परीक्षाओं के बोझ में कमी पर जोर देती है, जिससे छात्रों को वास्तविक दुनिया की स्थितियों में अवधारणाओं को लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी का एकीकरण: एनईपी 2020 का उद्देश्य डिजिटल विभाजन को पाटना और प्रौद्योगिकी को सीखने की प्रक्रिया में एकीकृत करना है।

नवाचार को बढ़ावा देने की पहल: सरकार ने नवाचार और अनुसंधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं, जैसे:

अटल टिंकरिंग लैब्स (एटीएल): इन प्रयोगशालाओं को स्कूलों में स्थापित किया गया है ताकि एसटीईएम क्षेत्रों में रचनात्मकता और हाथों से सीखने को प्रोत्साहित किया जा सके।

स्मार्ट इंडिया हैकाथॉन: यह पहल छात्रों को प्रौद्योगिकी का उपयोग करके वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

लिंग अंतर को संबोधित करते हुए: हाल की पहल, जैसे कि वाईस किरन योजना, विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाओं का समर्थन करने और स्टेम क्षेत्रों में लिंग समानता को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई है। लगातार चुनौतियां और भविष्य आउटलुक महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, चुनौतियां बनी हुई हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच एक डिजिटल विभाजन कई छात्रों के लिए गुणवत्ता स्टेम शिक्षा तक पहुंच को सीमित करता है। शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार और योग्य शिक्षकों को बनाए रखने की भी लगातार आवश्यकता है। NEP 2020 जैसे सुधारों का सफल कार्यान्वयन भारत के लिए वैश्विक ज्ञान केंद्र और नवाचार में अग्रणी बनने की दिशा में अपनी यात्रा जारी रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

लड़कियों के लिए स्टेम शिक्षा को एक महत्वपूर्ण विकास द्वारा चिह्नित किया गया है, जो कम भागीदारी की अवधि से लेकर महिला स्टेम स्नातकों की उच्च संख्या तक चलती है

विजय गर्ग

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद से, लड़कियों के लिये स्टेम शिक्षा की यात्रा को एक महत्वपूर्ण विकास द्वारा चिह्नित किया गया है, जो कम भागीदारी की अवधि से एक ऐसे व्यक्ति की ओर बढ़ रहा है जहां भारत महिला स्टेम स्नातकों की एक उच्च संख्या का दावा करता है, यहां तक कि कुछ विकसित देशों को भी पार कर रहा है। हालांकि, यह प्रगति लगातार चुनौतियों के साथ रही है, विशेष रूप से एसटीईएम कार्यबल में शैक्षिक उपलब्धियों को समान प्रतिनिधित्व में अनुवाद करने में। प्रारंभिक वर्ष और क्रमिक प्रगति: स्वतंत्रता के तुरंत बाद के वर्षों में, विशेष रूप से विज्ञान के क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों में महिला नामांकन बहुत कम था। जैसा कि राष्ट्र ने औद्योगीकरण और तकनीकी उन्नति पर ध्यान केंद्रित किया, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जैसे संस्थान स्थापित किए गए। जबकि ये संस्थान तकनीकी शिक्षा को औपचारिक बनाने में महत्वपूर्ण थे, इन क्षेत्रों में लिंग अंतर महत्वपूर्ण रहा। लड़कियों सहित सभी के लिए शिक्षा पर सरकार का ध्यान बाद के दशकों में कर्षण प्राप्त करना शुरू कर दिया। प्रारंभिक नीतियों और पहल का उद्देश्य महिला साक्षरता में सुधार और शिक्षा तक पहुंच ने भविष्य की प्रगति के लिए आधार बनाया। 6 वीं पंचवर्षीय योजना में, विशेष रूप से, महिलाओं और विकास पर एक अध्याय शामिल था, विज्ञान में महिलाओं पर एक विशिष्ट खंड के साथ, इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए एक अधिक ठोस प्रयास को चिह्नित किया गया था। महिला स्टेम स्नातकों का उदय: हाल के दशकों में, भारत ने स्टेम डिग्री के साथ पीछा करने और स्नातक करने वाली महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण सहित विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, स्टेम में महिला स्नातकों की संख्या लगातार बढ़ी है। यह कई कारकों के लिए जिम्मेदार है:

सरकारी पहल और नीतियां: सरकार ने लड़कियों को एसटीईएम शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए हैं। इनमें शामिल हैं:

विज्ञान ज्योति: एसटीईएम को आगे बढ़ाने के लिए कक्षा 9-12 की लड़कियों को प्रोत्साहित करने का एक कार्यक्रम, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां महिला भागीदारी कम है।

WISE-KIRAN (विज्ञान और इंजीनियरिंग-किरन में महिला): विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा एक व्यापक योजना फैलोशिप और अन्य सहायता तंत्र के माध्यम से अपने वैज्ञानिक करियर के विभिन्न चरणों में महिलाओं का समर्थन करने के लिए।

ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस के लिए लिंग उन्नति: एसटीईएमएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, गणित और चिकित्सा) में लिंग इक्विटी को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत स्तर पर परिवर्तनकारी परिवर्तन लाने के उद्देश्य से एक चार्टर।

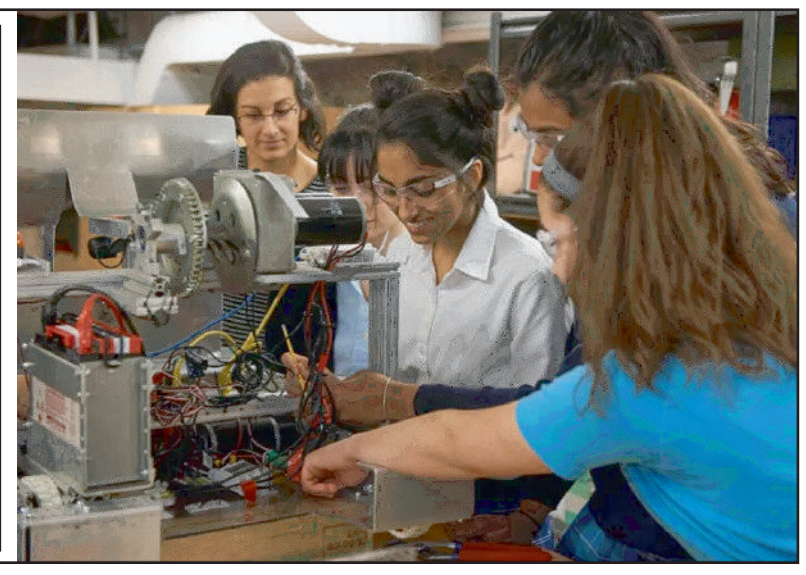

आरक्षण और कोटा: आईआईटी में महिलाओं के लिए अलौकिक सीटों (20% कोटा) की शुरुआत ने इन प्रमुख संस्थानों में महिला नामांकन में काफी वृद्धि की है

सामाजिक बदलाव: जबकि पारंपरिक पूर्वाग्रह बने रहते हैं, महिलाओं की शिक्षा और करियर के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में धीरे-धीरे बदलाव आया है। सफल महिला वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की बढ़ती दृश्यता ने युवा पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा के रूप में भी काम किया है। लगातार रलीक पाइपलाइनर: महिला स्टेम स्नातकों की प्रभावशाली संख्या के बावजूद, एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है: रटपका हुआ पाइपलाइनर घटना। यह एसटीईएम क्षेत्रों की महिलाओं के क्रमिक आकर्षण को संदर्भित करता है क्योंकि वे शिक्षा से रोजगार और नेतृत्व की भूमिकाओं में जाते हैं। डेटा इंगित करता है कि जबकि भारत में महिला एसटीईएम स्नातकों (लगभग 43%) का उच्च प्रतिशत है, एसटीईएम कार्यबल में उनका प्रतिनिधित्व काफी कम (एक तिहाई से कम) है। इस अंतर के कारण जटिल और बहुआयामी हैं:

सांस्कृतिक और सामाजिक पूर्वाग्रह: स्टीरियोटाइप्स और गलत धारणाएं जो एसटीईएम क्षेत्र पुरुषों के लिए बेहतर अनुकूल हैं, एक बाधा बनी हुई है। लड़कियों को अक्सर करियर पर परिवार और शादी को प्राथमिकता देने के लिए दबाव का सामना करना पड़ता है, जिससे करियर टूट जाता है या कार्यबल को पूरी तरह से छोड़ दिया जाता है।

रोल मॉडल और मेंटरशिप की कमी: जबकि प्रगति हुई है, एसटीईएम में वरिष्ठ पदों पर महिला रोल मॉडल की कमी युवा महिलाओं को दीर्घकालिक करियर बनाने से हतोत्साहित कर सकती है।

अवसंरचना और संसाधन: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन और कई स्कूलों में अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाओं की कमी गुणवत्ता एसटीईएम शिक्षा तक पहुंच को सीमित कर सकती है।

कार्यस्थल पर्यावरण: लिंग-उच्चारण चुनौतियां, जैसे कि एसटीईएम शिक्षा की निषेधात्मक लागत और लचीली और सुरक्षित कार्यस्थलों की कमी, महिलाओं को असंगत रूप से प्रभावित करती हैं। निष्कर्ष: स्वतंत्रता के बाद से भारत में लड़कियों के लिए स्टेम शिक्षा की प्रगति उल्लेखनीय वृद्धि और लगातार चुनौतियों की कहानी है। जबकि नीतियों और सामाजिक परिवर्तनों के कारण एसटीईएम क्षेत्रों में महिला नामांकन और स्नातक में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है, एसटीईएम कार्यबल में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व निरंतर प्रयासों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। ध्यान अब न केवल लड़कियों को स्टेम में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित करने की ओर बढ़ रहा है, बल्कि एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र भी बना रहा है जो उन्हें अपने करियर में कामयाब और सफल होने में सक्षम बनाता है।

डेड इकानामी की तेज धड़कन

विवेक रंजन श्रीवास्तव

दुनिया में अब "तथ्य" की उम्र उतनी ही रह गई है जितनी शादी में जूते चुराने वाली रस्म की । अपने अंदाज में उंगली उठाकर उन्होंने एलान कर दिया कि भारत की इकानामी मर चुकी है । विपक्ष का नेतृत्व संभाले हमारे बाबा ने तुरंत सुर में सुर मिला दिया। उनके फॉलोवर भी सोशल मीडिया पर टूट पड़े । मृत अर्थव्यवस्था के शोक संदेश, मीम, और शायरियाँ वायरल हो गईं

लेकिन वास्तविक आंकड़े बेचारे कोने में बैठकर हँस रहे थे, जैसे कोई बूढ़ा डॉक्टर ई सी जी रिपोर्ट हाथ में लिए कह रहा हो "अरे, मरीज ज़िंदा है।"

IMF का जुलाई 2025 का अपडेट कहता है कि विश्व अर्थव्यवस्था 3 % की रफ्तार से बढ़ रही है। OECD का अनुमान थोड़ा कम है—2.9 %—जैसे डॉक्टर कह रहा हो कि बुखार है लेकिन पांव कब्र में नहीं हैं। विश्व बैंक जरूर थोड़े डरे हुए लहज़े में बोलता है कि यह 2008 के बाद का सबसे सुस्त दशक है, 2025 में 2.3 % की रफ्तार से चल रही है पर भारतीय अर्थ व्यवस्था की गति लगभग 6 प्रतिशत अनुमानित है।

आंकड़े कथित डेड इकानामी की मौत का सर्टिफिकेट लिखने से मना कर रहे है।

"डेड" वाला बयान वैसा ही लगता है जैसे किसी शादी में खाना खाते वक्त फूफा घोषणा कर दें कि दाल जल गई है, और फिर हर मेहमान बिना चखे ही वैसा ही बोलना शुरू कर दे। सोशल मीडिया का माहौल मज़ेदार है, कोई GDP को ECG की तरह दिखा रहा है जिसमें लकीरें सीधी नहीं बल्कि हल्की-हल्की लहरदार हैं। कुछ लोग कह रहे हैं, "देखो, फ्लैट हो रही है !", और कुछ कह रहे हैं, "नहीं भाई, ये तो धड़ा धड़, धड़क रही है।"

बाकी दुनिया में मंदी की बयार है, पर भारत अपने विकास के साथ अभी भी 6 % से ऊपर की गति से भाग रहा है जैसे कोई मैराथन में बाकी धावकों को पीछे छोड़कर सेल्फी लेता हुआ आगे निकल जाए। हाँ, महंगाई, बेरोज़गारी और रुपया-डॉलर का नृत्य हमें भी परेशान करता रहता है, टैरिफ के झंझावात भी रुपए को कमजोर नहीं कर पा रहे। "डेड" क्या हम तो बेड पर भी नहीं हैं।

समस्या ये है कि "डेड" जैसे शब्द अब अर्थव्यवस्था की भाषा में नहीं, राजनीति की भाषा में इस्तेमाल हो रहे हैं। एक अर्थ शास्त्र के नोबल पुरस्कार विजेता नेता पड़ोसी देश में थोपे गए राष्ट्रपति हैं, उनसे उस छोटे से मुल्क की आर्थिक स्थिति संभाली नहीं जा रही है।

टैरिफ वाला टेरर फ़ैला कर किसी को व्यापारिक प्रभुत्व चाहिए ताकि उनके वोटर सोचें कि उनके बिना दुनिया का कारोबार ठप हो जाएगा। उन्हें नोबेल की दरकार है।

आम जनता फेसबुक और वॉट्सऐप पर नए-नए इकोनॉमिक चुटकुले बनाकर मजे ले रही है । जैसे GDP और IPL एक ही तरह की चीज़ हों, बस स्कोर देखो और मज़ा लो।

वैश्विक इकानामी में मंदी है, हाँ वैसी ही मंदी है जैसे गर्मी में पंखे की धीमी स्पीड के उसके नीचे बैठना। आपको हवा का झोंका कम लगता है, लेकिन पंखा घूम रहा होता है। व्यापार , युद्ध, सप्लाई चेन की खिचड़ी, और कर्ज़ की दलदल ने कदम धीमे और संभाल कर चलने पर विवश कर दिया है, पर धड़कन बंद नहीं हुई। IMF की रिपोर्ट में 2026 के लिए रफ्तार बढ़ने की उम्मीद है ।यानी डॉक्टर कह रहा है, "डाइट सुधारो, दवा लो, और मरीज अगले साल ज्यादा बेहतर हो सकता है।"

तो कथित "डेड" और राहुल बाबा के "हाँ-हाँ, डेड" के बीच सच्चाई ये है कि इकानामी अर्थी पर नहीं है और लगातार दवा खा रही है। ECG में धड़कन है और अगर राजनीति वाले शोर कम कर दें तो थोड़ी तेज दौड़ भी लगा सकती है लेकिन यह मान लेना कि इकानामी मर चुकी है, वैसा

नारायणा हॉस्पिटल और रॉयल्स ने अध्यक्ष अमित की अगुवाई में लिया रास्तपुर को गोद, दिए 2 करोड़

सुनील बाजपेयी

कानपुर। यहां देश और समाज सेवा में अग्रणी जेसीआई रॉयल्स और नारायणा हॉस्पिटल ने चिकित्सा सुविधाओं के लिये सामाजिक सेवा और ग्रामीण विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल करते हुए 2 करोड रुपए की सौगात की घोषणा के साथ रास्तपुर गांव को गोद लिया है ,जिसके फलस्वरुप अब इस गांव का पूर्ण रूप से कायाकल्प होना तय माना जा रहा है। माना जा रहा है कि .2 करोड़ की विकास योजनाओं की इस महत्वपूर्ण सौगात से गांव रास्तपुर को स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वचस्ता और सामुदायिक विकास को नई दिशा मिलेगी। इस अवसर पर जेसीआई रॉयल्स के अध्यक्ष अमित नारायन त्रिवेदी ने ग्रामवासियों को सम्बोधित करते हुए किसान को ही सच्चा देशभक्त बताया और कहा कि वह किसान ही है,जो अपने बच्चों को किसान तथा सैनिक बनाता है और यह बच्चे ही आम जनमानस को रोटी और देश को सुरक्षा की गारण्टी देते हैं। समाज सेवा के क्षेत्र में भी अग्रणी और हर किसी के सुख दुख में सदैव खड़े होने वाले चर्चित समाजसेवी, नारायण ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के चेयरमैन तथा रॉयल्स कानपुर के भी अध्यक्ष अमित नारायण त्रिवेदी ने यहां यह भी कहा कि भारतवर्ष के विकास का पथ ग्राम के विकास से ही निकलता है ,जब ग्राम विकसित होंगे तथा ग्रामवासी स्वस्थ रहेंगे तभी देश विकास कर सकेंगा। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती अनुराधा अवस्थी ने जेसीआई रायल्स और नारायणा हॉस्पिटल के इस प्रयास को रास्तपुर के लिए परिवर्तन की रोशनी भी बताया। जबकि डॉ रोहिणी श्रीवास्तव ने कहा कि रायल्स ने इस गांव के हर व्यक्ति के भविष्य को अपनी जिम्मेदारी माना है। डॉ.तरुण निगम ने गांव के दीर्घकालिक विकास और आत्मनिर्भरता को जेसीआई रॉयल्स और नारायण हॉस्पिटल का लक्ष्य बताया।

वहीं नारायणा अस्पताल के प्रबंध निदेशक उदित नारायण ने इस मौके पर नारायना अस्पताल द्वारा निःशुल्क हेल्थ चेकअप, मेडिकल कैंप और ग्रामीण स्वास्थ्य जागरूकता जैसे कई कार्यक्रम नियमित रूप से चलाए जाने का भी भरोसा दिया ,जिसका गांव वालों और ग्राम प्रधान ने भी जोरदार स्वागत करते हुए इसे नए युग की शुरुआत भी बताया। और कहा कि पहली बार किसी संस्था ने गांव को केवल वादों से नहीं, बल्कि योजनाओं और संसाधनों के साथ अपनाया है।

जेसीआई रॉयल्स के अध्यक्ष अमित नारायन त्रिवेदी ,नारायणा अस्पताल के प्रबंध निदेशक, उदित नारायन, अनिद मिश्रा, कोषाध्यक्ष गौरव तोषनीवाल ,डॉ. तरुण निगम, कार्यक्रम निदेशक डॉ. रोहिणी श्रीवास्तव की मंच पर मौजूदगी और सामूहिक संकल्प व आभार ज्ञापन के साथ संपन्न हुए इस अनुकरणीय और सराहनीय आयोजन के मौके पर जेसी आई रायल्स की तरफ से डॉ. सुमित मिश्रा, मोहित पांडे, अखिल कनौडिया, गुजन त्रिपाठी, पारस त्रिपाठी, पंकज और ग्राम प्रधान के साथ बड़ी संख्या में गांव वाले भी मौजूद रहे।

त्याग के साये में जन्मा अहम

डॉ. सत्यवान सौरभ

घर के आँगन में पीपल का पुराना पेड़ खामोशी से खड़ा था। उसकी छाँव में खेलते हुए बीते साल जैसे किसी पुराने संदूक में बंद पड़े थे। इस घर की दीवारों ने न जाने कितनी कहानियाँ देखी थीं — हँसी की, आँसुओं की, त्याग और उपेक्षा की।

बड़े बेटे ने महज़ छठी कक्षा से ही घर का बोझ अपने कंधों पर उठा लिया था। पिता का स्वभाव ऐसा कि घर के कामों में कोई स्थायी हाथ बँटाना उनकी आदत में नहीं था। न कोई बड़ा सपना, न मेहनत से आगे बढ़ने की चाह। उस उम्र में, जब बाकी बच्चे अपनी पढ़ाई और खेलों में मग्न होते हैं, उसने ट्यूशन पढ़ाकर खुद की पढ़ाई भी पूरी की और छोटे भाई की भी।

बहनों की पढ़ाई के लिए जितना संभव हो सका, उसने पैसे जुटाए। कपड़े, किताबें, फीस — हर ज़रूरत में वह आगे खड़ा था। शादी के बाद उसकी पत्नी भी इस जिम्मेदारी में बराबर की साझेदार बनी। वह न सिर्फ अपने घर की जिम्मेदारी निभाती, बल्कि ननदों को उनके घर जाकर पढ़ाती, उन्हें अपने साथ कोचिंग ले जाती।

घर की छोटी-बड़ी ज़रूरतों के लिए बड़े की नौकरी और उसकी पत्नी के पैसों पर ही घर चलता रहा। पत्नी के फिक्स्ड डिपॉज़िट तक घर के खर्च में लग गए। जब उसकी पत्नी की भी नौकरी लगी, तब भी उनकी पूरी तनख्वाह घर की उन्नति में लगती रही।

कई सालों बाद बड़ा भाई नौकरी में स्थिर हुआ। उसने घर का सपना सजाया — नया मकान बनवाया, एक पुरानी गाड़ी खरीदी ताकि घर के काम आसानी से हों। लेकिन गाड़ी का इस्तेमाल भी ज्यादातर छोटा ही करता। यहाँ तक कि जब उसकी पत्नी गर्भवती थी, तब भी छोटा गाड़ी लेकर चला जाता और भाभी बस से ड्यूटी जाती। बड़ा भाई खुद किसी और के साथ काम पर जाता।

बड़े के बेटे के जन्म से पहले ही छोटे भाई की नौकरी लग चुकी थी। पर जिम्मेदारियों में हाथ बँटाने या घर का पुराना कर्ज़ चुकाने के बजाय वह अपने ही आराम में लगा रहा।

एक-दो बार बड़े ने माता-पिता से भी कहा कि छोटे की जरूरतों पर ध्यान दो, पर उसकी इच्छाओं को पंख मत लगाओ। मगर माता-पिता ने यह नहीं सोचा कि बड़ा सालों से परिवार का बोझ उठाए हुए है और अपना सब कुछ घर के लिए झोंक चुका है।

बड़ा भाई और भाभी हमेशा छोटे के लिए खुद से

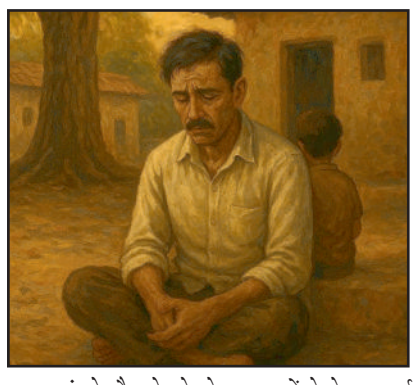

अच्छा ढूंढते और सोचते रहे — कपड़ों से लेकर पढ़ाई और सुविधा तक, हर बार उन्होंने पहले छोटे की ज़रूरत पूरी की। लेकिन माता-पिता और छोटे की इच्छाओं को कभी सब्र नहीं मिला; जो चाहा, तुरंत चाहिए था, चाहे उसके लिए बड़े का त्याग और मेहनत क्यों न कुर्बान हो।

बड़े भाई और उसकी पत्नी दोनों ड्यूटी करते और बच्चा पिता की गोद में पलता। इस वक्त भी न सास-ससुर, न बहनें और न ही छोटा भाई मदद को आगे आए।

कुछ समय बाद छोटे भाई की शादी हुई। उसकी पत्नी भी नौकरी में थी। घर के कर्ज़ को उतारने के बजाय दोनों ने नई गाड़ी खरीद ली। जबकि बड़े भाई की पत्नी को मायके से गाड़ी के लिए जो पैसे मिले थे, वे भी इस घर को आगे बढ़ाने में खर्च हो चुके थे ।सबसे चुभने वाली बात यह थी कि बहनों की पढ़ाई और ज़रूरतों के लिए सालों तक सबकुछ देने के बाद भी, वे छोटे भाई के पक्ष में रहीं। जैसे बड़े का हर त्याग, हर मेहनत किसी पुराने कपड़े की तरह बेमानी हो गया हो।

अब घर का माहौल बदल चुका था। छोटा भाई और उसकी पत्नी के बीच अहम का भाव बढ़ चुका था। बातें तानों में बदल गई थीं, और ताने अपमान में। कभी-कभी तो छोटे का गुस्सा हाथ तक पहुँच जाता। सास-ससुर भी इस पर चुप रहते।

बड़ा भाई अब अपने बेटे और पत्नी के साथ ही अपनी छोटी-सी दुनिया में सीमित हो चुका था। पर एक अजीब-सी खामोशी उसके भीतर घर कर गई थी — वह खामोशी, जो सिर्फ वही समझ सकता था, जिसने सालों तक दूसरों के लिए अपना सब कुछ दे दिया हो और बदले में सिर्फ दूरी पाई हो।

दुख इस बात का नहीं था कि मेहनत का प्रतिफल नहीं मिला, बल्कि इस बात का था कि जिनके लिए जीवन का हर पल खपा दिया, उन्होंने ही मुंह मोड़ लिया। बड़े ने बहनों की पढ़ाई के लिए जो त्याग किया, उन्हें अपने घर तक पढ़ाया, वे भी चुपचाप छोटे के साथ खड़ी रहीं। बड़े के बेटे के जन्म के बाद भी किसी ने उसका ध्यान नहीं रखा — न दादी ने, न बुआओं ने, न चाचा-चाची ने।

समय का चक्र घूमता रहा, पर एक सच्चाई स्थिर रही — वह किशोर, जिसने छठी कक्षा से घर संभालना शुरू किया था, आज भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटा। बस अब उसने उम्मीद करना छोड़ दिया था।

एक रात, बरसों के घुटे हुए दर्द के बाद, उसने पत्नी से कहा —

"शायद गलती हमारी ही थी हमने सोचा था कि खून का रिश्ता सबसे बड़ा होता है। पर असल में, समझ और सम्मान ही रिश्तों को जीवित रखते हैं।"

पत्नी ने बस उसका हाथ थाम लिया। आँसुओं से भरी आँखों में कोई शिकवा नहीं था, बस एक दृढ़ता थी —"अब हम अपने बेटे को ये सिखाएँगे कि इंसानियत पहले, रिश्ते बाद में।"

आंगन में हवा चल रही थी। दूर मंदिर की घंटियाँ बज रही थीं। घर वही था, लोग वही थे, पर बड़ा भाई अब भीतर से बदल चुका था। वह जान चुका था कि त्याग का फल हमेशा आभार नहीं होता — कभी-कभी बस चुप्पी और दूरी मिलती है।

एक शाम, जब घर के आँगन में पीपल की पत्तियाँ सरसराईं, बड़ा भाई चुपचाप अपने बेटे को गोद में लेकर बैठा था। बेटा मासूमियत से पूछ बैठा —

"पापा, आप हमेशा इतने चुप क्यों रहते हो?"

बड़े ने हल्की मुस्कान दी, पर भीतर का दर्द आँखों में उतर आया। उसने बस इतना कहा —

"कभी-कभी बेटा, चुप रहना सबसे बड़ी ताकत होती है।"

पीपल का पेड़ उस शाम और भी स्थिर हो गया था। जैसे उसने भी यह वादा कर लिया हो कि वह इस घर के त्याग की छाया को हमेशा संजोकर रखेगा — चाहे लोग भूल जाएँ, पर हवा की हर सरसराहट में वह कहानी ज़िंदा रहेगी।

यह कहानी खुली छोड़ दी गई है, ताकि पाठक सोच सके —

क्या कभी छोटे भाई, सास-ससुर और बहनें उस त्याग को समझेंगे?

या यह भी एक ऐसी कहानी होगी, जो सिर्फ पीपल के पत्तों की सरसराहट में सुनी जाएगी'

जन्माष्टमी महोत्सव पर स्कूल के छोटे बच्चों का उल्हास।

बिरला ओपन माइंड्स प्रीस्कूल स्कीम नं 140 इन्दौर में जन्माष्टमी महोत्सव पर छोटे छोटे नन्हे मुन्ने बच्चों में खास उल्लास व उंमगता देखी गई। सभी बच्चे छोटे बाल गोपाल स्वरुप में मनोहरी छवि में अद्भुत लग रहें थे। जहां जानकारी प्रेस विज्ञप्ति में स्कूल के संचालक निलय जैन ने दी है। उन्होंने बताया की भारतीय संस्कृति सभ्यता व परंपरा के साथ साथ हमारे तीज त्योहार पर्व की जानकारी छोटे बच्चों को दी जाना वर्तमान समय में बहुत जरूरी है। क्योंकि जब छोटे से पोंधे को समय-समय पर मिट्टी खाद्य बीज व पानी मिलेगा तो वह अंकुरित हो कर बड़ा वृक्ष बनेगा और सभी को छाया देगा। इसी उद्देश्य को देखते हुए हम हमारे स्कूल में नैतिक शिक्षा समाजिक सरोकार व धार्मिक सीख से बच्चों को संस्कारवान बनने के लिए संकल्पित है।

रेत, लालच और उपेक्षा के बीच तड़पती जलधाराएँ

भारत की सभ्यता नदियों की पवित्र गोद में पलकर सँवरी है। सिंधु और गंगा के तटों पर बसे प्राचीन नगर केवल व्यापारिक या सांस्कृतिक केंद्र नहीं थे, बल्कि जीवन की धड़कन थे, जो नदियों के निर्मल प्रवाह से जीवंत रहे। ये नदियाँ भारत की आत्मा हैं, जिन्होंने खेतों को हरियाली, गाँवों को जीवन और संस्कृतियों को एकता का सूत्र दिया। किंतु आज आधुनिक भारत की तस्वीर हृदय को मर्माहत करती है। जिन नदियों ने हमें जीवन का अमृत दिया, वही हमारी लापरवाही, लोभ और उपेक्षा की भेंट चढ़ रही हैं। गंगा-यमुना जैसी विशाल नदियों पर योजनाएँ और चर्चाएँ भले हों, पर हजारों छोटी नदियाँ, झरने और तालाब गुमनामी के अंधकार में खो रहे हैं। ये छोटी नदियाँ, जो गाँवों के लिए किसी गंगा से कम नहीं थीं, आज मृत्युशैया पर हैं, केवल सूखी धरती और टूटी आशाओं की मूक कहानी कहती हुई।

स्थिति भयावह है। जल संसाधन मंत्रालय (2023) के अनुसार, 70% से अधिक छोटी नदियाँ सूख चुकी हैं या सूखने की कगार पर हैं। बेतवा, रूपनगढ़, कांची और कोनार जैसी नदियाँ, जो कभी गाँवों की जीवनरेखा थीं, आज कूड़े, रेत माफिया और अवैध निर्माण की मार से जर्जर हैं। कई नदियाँ प्रदूषण के कारण नालों में बदल गई हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी की रिपोर्ट बताती है कि 50 वर्षों में इनका प्रवाह 50% तक सिकुड़ गया। इससे ग्रामीण आत्मनिर्भरता चरमराई है। किसान, जो कभी इन नदियों से खेत सींचते थे, अब मँहगे ट्यूबवेल और रीतते भूजल पर निर्भर हैं। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, भूजल स्तर प्रतिवर्ष 1-2 मीटर नीचे गिर रहा है, जिससे जलवायु परिवर्तन और सूखा और गहरा रहा है। यह जल संकट नहीं, सभ्यता के अस्तित्व का संकट है।

यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को झकझोरने वाला है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (2022) के आँकड़े चेताते हैं कि जल संकट और सूखे ने किसानों की आत्महत्याओं को बढ़ाया है, खासकर जहाँ छोटी नदियाँ मृतप्राय हैं। छोटे और सीमांत किसान, जिनके पास साधन सीमित हैं, सबसे अधिक प्रभावित हैं। खेती की लागत बढ़ी, उत्पादन घटा, और गाँवों में पानी लाने का बोझ महिलाओं व बच्चों पर पड़ रहा है। यूनेस्को (2023) की रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण भारत में 35% महिलाएँ प्रतिदिन 2-4 घंटे पानी जुटाने में खर्च करती हैं। यह जल की कमी नहीं, सामाजिक असमानता और मानवीय गरिमा का संकट है।

किंतु इस अंधकार में आशा की किरणें चमक रही हैं। देशभर में छोटी नदियों के पुनर्जनन के लिए सामुदायिक आंदोलन उभर रहे हैं। महाराष्ट्र का हिवरे बाज़ार गाँव इसका प्रेरक उदाहरण है, जहाँ ग्रामीणों ने श्रमदान से सूखी नदी को जीवंत किया। आज यह गाँव जल संरक्षण का वैश्विक मॉडल है, जहाँ प्रति व्यक्ति आय 1995 के 20,000 रुपये से बढ़कर 2023 में 2.5 लाख रुपये से अधिक हो गई। कर्नाटक के कोलार में 'तालाब पुनर्जीवन अभियान' ने धाराओं को पुनर्जनन दिया। मध्यप्रदेश की 'नर्मदा सेवा यात्रा' ने लाखों लोगों को संकल्पित कर जलग्रहण क्षेत्रों में हजारों पौधे लगाए। राजस्थान के "जलपुरुष" राजेंद्र सिंह ने तरुण भारत संगम के माध्यम से अरावरी, रूपारेल और भगानी जैसी नदियों को जीवन लौटाया, जिसे 2001 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार मिला।

ये प्रयास रेखांकित करते हैं कि नदियों का पुनर्जनन केवल सरकारी योजनाओं पर निर्भर नहीं। समुदाय की सक्रिय भागीदारी के बिना कोई योजना फलित नहीं हो सकती। "जलपुरुष" राजेंद्र सिंह का कथन, "नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और सामाजिक ताने-बाने की रीढ़ है," गहन सत्य उद्घाटित करता है। जब समुदाय नदी को अपनी जिम्मेदारी मानता है, तभी वह पुनर्जनन पाती है। हमारे पास वर्षा जल संग्रहण, पारंपरिक जोहड़-तालाबों का पुनर्निर्माण, तटवर्ती वृक्षारोपण और भूजल पुनर्भरण जैसे किफायती और प्रभावी तकनीकी समाधान हैं। जल विशेषज्ञों के अनुसार, यदि प्रत्येक गाँव वर्षा के 30% जल को संरक्षित कर ले, तो भूजल स्तर स्थिर होगा और छोटी नदियाँ स्वतः जीवंत हो उठेंगी।

सरकारी प्रयासों ने भी नदियों के पुनर्जनन को गति दी है। 'अमृत सरोवर योजना' और 'जल शक्ति अभियान' ने ग्रामीण जलस्रोतों को पुनर्जनन का नया जीवन दिया। 2023 तक, अमृत सरोवर योजना के तहत 60,000 से अधिक तालाबों का निर्माण और जीर्णोद्धार हुआ। किंतु इन योजनाओं की सार्थकता तभी है, जब समुदाय सक्रिय सहभागी बने। गुजरात के सौराष्ट्र में सौरभ वनिक ने 'वृक्ष प्रेमी' के माध्यम से 12,000 से अधिक पौधे लगाकर और जल संरक्षण तकनीकों से कई छोटी नदियों को जीवन लौटाया।

नदियों का पुनर्जनन केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और आर्थिक समृद्धि का सवाल है। सूखती नदियाँ छोटे किसानों की आजीविका निगल रही हैं, जिससे जल संकट, गरीबी और आत्महत्याएँ बढ़ी हैं। पानी की कमी ने ग्रामीण महिलाओं और बच्चों के जीवन को और दूभर किया है। यह केवल जल की हानि नहीं, बल्कि सामाजिक ढाँचे का क्षरण है, जो हमारी साझा जिम्मेदारी को पुकारता है।

नदियाँ भारत की सांस्कृतिक आत्मा हैं। प्रत्येक नदी से कोई न कोई लोककथा, गीत या परंपरा जुड़ी है। बंगाल की दामोदर "शोक की नदी" है, तो साबरमती गांधी के स्वतंत्रता संग्राम की साक्षी। छोटी नदियाँ भी अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं। इनके मिटने से केवल जलस्रोत नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान भी खत्म हो रही है। इसलिए नदियों का पुनर्जनन केवल जल संरक्षण नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का संकल्प है।

सबसे बड़ी चुनौती है विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन। शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और अवैध खनन ने नदियों को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया है। यदि हमने इस लापरवाही को जारी रखा, तो नदियाँ केवल इतिहास की किताबों में रह जाएँगी। लेकिन यदि हम अपने पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ें, तो इन नदियों में फिर से जीवन की लहरें दौड़ सकती हैं।

भारत की भूली-बिसरी नदियाँ हमें सिखाती हैं कि जीवन की असली शक्ति भव्यता में नहीं, बल्कि छोटे-छोटे स्रोतों में छिपी है। ये छोटी नदियाँ ग्रामीण भारत की धड़कन हैं। इन्हें बचाना केवल प्रकृति के प्रति हमारा कर्तव्य नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक पवित्र जिम्मेदारी है। यह आंदोलन केवल नदियों का पुनर्जनन नहीं, बल्कि हमारी आत्मा, संस्कृति और मानवता का पुनर्जनन है। इस संकल्प में शामिल हों और अपनी नदियों को फिर से जीवन दें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

मैं अपनी ख़ुशी की खातिर इन ज़िम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ सकती।

कश्मीर की वादियों में उस सुबह झेलम की धारा कलकल करती बह रही थी। डल झील पर हल्की धुंध तैर रही थी और चिनार के पत्तों की सरसराहट हवा में गूँज रही थी। इन्हीं खूबसूरत नज़ारों के बीच आरमान रोज़ाना कॉलेज जाया करता था। उसके लिए कॉलेज केवल पढ़ाई की जगह नहीं था, बल्कि वहाँ उसकी एक उम्मीद बसती थी,इनाया।सफेद दुपट्टे में लिपटी इनाया की आँखों में झील जैसी गहराई थी। चाल-ढाल में सादगी और चेहरे पर ऐसी हया कि देखने वाला नज़र झुका ले। मगर उसकी इस मासूमियत के पीछे ज़िम्मेदारियों का पहाड़ छिपा था। बीमार पिता, बहनों की पढ़ाई और उनके निकाह का बोझ, और भाई की बेरुखी—सब कुछ उसके छोटे से कंधों पर था।कक्षा में जब वह किताबों में डूबी रहती, आरमान की नज़रें उसी पर ठहर जाया करतीं। कई बार उनकी आँखें मिलीं, मगर फिर इनाया झट से नज़रें झुका लेती। उसके दिल की किताब में भी शायद वही हर्फ़ लिखे थे, जिन्हें आरमान अपनी निगाहों से पढ़ना चाहता था।एक दिन लाइब्रेरी में दोनों एक ही किताब के लिए हाथ बढ़ा बैठे। खामोशी और गहरी हो गई। आरमान ने हिम्मत करके कहा, "इनाया अब मैं और नहीं छिपा सकता। मेरी दुआओं का नाम आप हैं। अगर आप चाहें तो यह मोहब्बत नज़रें चुराने तक सीमित न रहे, बल्कि ज़िन्दगी की रहगुज़र तक पहुँच जाए।" इनाया की आँखें भीग गईं। उसने धीमी आवाज़ में कहा, "आरमान आप नेक हैं, मगर मैं अपनी मोहब्बत को अपने फ़र्ज़ के आगे झुका नहीं सकती। वालिद बीमार हैं, घर का बोझ मुझ पर है, दो बहनों की शादियों की फिक्र है। मैं अपनी खुशी की खातिर इन जिम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ सकती।"उस दिन आरमान का दिल टूट गया, मगर उसने उसके फैसले की इज़्ज़त की। उसने बस इतना कहा, "तो मेरी मोहब्बत अब आपकी दुआ बनकर रहेगी। मैं आपको मजबूर नहीं करूंगा।"

वक्त का दरिया तेज़ी से बहा। इनाया ने अपने वालिद की सेवा की, बहनों की शादियाँ कराई, नौकरी की थकान और घर की जिम्मेदारियों को उठाते-उठाते अपनी जवानी खो दी। भाई अपनी शादी के बाद अलग हो गया और फिर एक दिन उसके वालिद भी अल्लाह को प्यारे हो गए। घर की सारी रौनक बुझ गई। इनाया के हिस्से में रह गई सिर्फ़ तन्हाइयों से भरी लंबी रातें और भारी खामोशियाँ। वह अक्सर खिड़की से बाहर दूर बर्फ़ीली वादियों को देखती और दिल से एक आह निकलती, "काश मैंने उस दिन आरमान का हाथ थाम लिया होता तो आज इतना अकेला न होती।"बरसों बाद, मोहल्ले की एक शादी में अचानक किस्मत ने उन्हें फिर मिला दिया। दोनों सफेद बालों और झुर्रियों के साथ खड़े थे, मगर दिल अब भी उतने ही जवां थे। आँखें मिलते ही सब पुराने लम्हे ताज़ा हो गए। आरमान ने कंपती आवाज़ में कहा, "इनाया हमने जवानी खो दी, मगर मोहब्बत को कभी दिल से नहीं निकाल पाए। क्या अब भी हमें बचे हुए दिन साथ बिताने का हक़ नहीं है?" इनाया की आँखों से आँसू बह निकले। उसने धीमे स्वर में कहा, "आरमान, अगर मोहब्बत इतनी सब्र वाली रही, तो इसे मुकम्मल होना ही चाहिए।"सादगी और दुआओं के साए में उनका निकाह हो गया। अब जब लोग उन्हें देखते तो कहते, "यही मोहब्बत है, जो वक्त और जुदाई के हर इम्तिहान के बाद भी ज़िन्दा रही।" डल झील की ठंडी हवा, चिनार के पत्तों की सरसराहट और कश्मीर की वादियाँ अब उनकी मोहब्बत की गवाह बन गईं।शाम ढलते ही झील के किनारे लकड़ी की बेंच पर दोनों बैठते। उनके सफेद बाल सुनहरी धूप में ऐसे चमकते जैसे चांदी के तार। उंगलियों में कंपन था, मगर वे एक-दूसरे का हाथ कस कर थामे रहते। इनाया मुस्कुराकर कहती, "आरमान, हमारी मोहब्बत ने जवानी को कभी देखा ही नहीं, मगर देखिए, इस बुढ़ापे में ये कितना सुकून दे रही है।" आरमान जवाब देता, "इनाया, लोग कहते हैं मोहब्बत वक्त से हार जाती है, लेकिन हमारी मोहब्बत साबित करती है कि सच्चा इश्क़ वक्त के साथ और गहरा हो जाता है। ये झील, ये वादियाँ, ये पत्ते सब हमारे किस्से के गवाह रहेंगे।"उनकी आँखों में आँसू थे, मगर चेहरों पर सुकून की तस्वीर। और उनकी ये कहानी किसी किनारे पर जाकर खत्म नहीं हुई, बल्कि एक ज़िंदा मिसाल बन गई,वादियों की उन ठंडी हवाओं में घुली हुई मोहब्बत की मिसाल, जो आने वाली नस्लों की दुआओं का हिस्सा बनकर हमेशा जिंदा रहेगी।

-डॉ.मुश्ताक अहमद शाह

'आत्म–निर्भर', 'उन्नत', और 'विकसित भारत' का रोड मैप !

15 अगस्त को सभी देशवासियों ने आजादी की 78 वीं वर्षगांठ या यूं कहें कि 79 वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया। स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से लगातार 12वें स्वतंत्रता दिवस समारोह को संबोधित करते हुए विभिन्न घोषणाएं की हैं, यह काबिले-तारीफ है। कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2025 (भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस) को लाल किले से 'विकसित भारत' के संकल्प के तहत कई नई घोषणा-युक्त पहलें करके 'विकसित भारत' का ब्लूप्रिंट प्रस्तुत किया है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने लाल किले से 17 बार देश को संबोधित किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से अब तक का सबसे लंबा, 103 मिनट का भाषण दिया जो, भारत के इतिहास में किसी भी प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया सबसे लंबा भाषण है। यह भाषण इसलिए अनुकरणीय है, क्योंकि इसमें जो घोषणाएं शामिल हैं, उनकी आज हमारे देश को बहुत जरूरत है। गौरतलब है कि शुक्रवार(15 अगस्त 2025 को) को 1 लाख करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना की घोषणा की। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस योजना से देश में 3.5 करोड़ रोज़गार का निर्माण होगा। जानकारी के अनुसार यह योजना नवनियोजित युवाओं को दो किस्तों में 15,000 रुपये तक का प्रोत्साहन और नौकरी के अवसरों को सृजित करने के लिए नए कर्मचारी के लिए नियोक्ताओं को 3000 प्रति माह तक प्रोत्साहन राशि प्रदान करेगी। दूसरे शब्दों में कहें तो एक लाख करोड़ रुपये की योजना 'प्रधानमंत्री विकासशील भारत रोजगार योजना' की शुरुआत की बात कही गई है। इसके तहत पहली नौकरी पाने वाले युवाओं को पंद्रह हजार रुपये मिलेंगे साथ ही कंपनियों को अधिक रोजगार देने पर प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। इतना ही नहीं, भारत की पहली सेमीकंडक्टर चिप बनाने से लेकर जेट इंजन बनाने तक, वर्ष 2047 तक दस गुना परमाणु ऊर्जा विस्तार अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण और बड़ी योजनाएं हैं। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का इन योजनाओं को लेकर संदेश स्पष्ट था कि भारत अपना भाग्य स्वयं परिभाषित करेगा, अपनी शर्तें स्वयं निर्धारित करेगा और 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य रखेगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि सुदर्शन चक्र अभियान की घोषणा आज के समय में विशेष मायने रखती है। आज सीमाओं पर भारत की चुनौतियां पहले की तुलना में बहुत बढ़ गई हैं। ऐसे में भारत द्वारा अपने राष्ट्रीय सुरक्षा कवच के विस्तार, सुदृढ़ीकरण और आधुनिकीकरण के लिए भविष्य में(वर्ष 2035 तक) सुदर्शन चक्र नामक मिशन की शुरूआत भारत को विकसित व सशक्त राष्ट्र बनाने में बहुत ही अहम्साबित होगा। यहां पाठकों को बताता चलूं कि सुदर्शन चक्र' नामक राष्ट्रीय सुरक्षा कवच के तहत एक शक्तिशाली हथियार प्रणाली विकसित की जाएगी दुश्मनों के हमलों को रोकने के साथ ही उन पर निर्णायक प्रहार भी करेगी। विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करने और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए मेड इन इंडिया(आत्मनिर्भर भारत के तहत) फाइटर जेट्स के लिए जेट इंजन स्वदेशी होगा। प्रधानमंत्री ने न्यूक्लियर ब्लैकमेल नहीं सहने की बात भी अपने संबोधन में कहीं है। सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री पर बात करते हुए प्रधानमंत्री ने यह बात कही है कि इस साल के अंत तक बाजार में 'मेड इन इंडिया सेमीकंडक्टर चिप्स उपलब्ध हो जाएंगे, यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। उन्होंने बताया है कि "नेक्स्ट जेनरेशन रिफॉर्म्स' की टास्क फोर्स गठित की गई है, जो स्पेस स्टेशन तैयार करने की महत्वाकांक्षी योजना पर काम कर रहे हैं। साथ ही इस योजना के तहत सेमीकंडक्टर और मेड इन इंडिया जेट पर भी काम हो रहा है। इतना ही नहीं, अमेरिका टैरिफ चुनौती और व्यापार गतिरोध के बीच पीएम मोदी ने बिना नाम लिए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप को यह संदेश दिया कि भारत किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों से कोई समझौता नहीं करेगा और उनके लिए दीवार बनकर खड़ा रहेगा। क्योंकि, भारत अब आत्मनिर्भर बन रहा है। प्रधानमंत्री ने दिवाली पर नया जीएसटी रिफॉर्म लाने की बात भी कही है, जिसके तहत मौजूदा जीएसटी दरों की समीक्षा की जाएगी। इससे कर का बोझ घट सकेगा और देश की आम जनता को महंगाई से राहत मिल सकेगी। दूसरे शब्दों में कहें तो जब रोजमर्रा के उत्पादों पर जीएसटी को घटाया जाएगा, तब ही आम जनता को राहत का एहसास होगा। यहां यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि जीएसटी में कमी का देश की आम जनता को काफ़ी समय से इंतजार है। पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि एक विशेष टास्क फोर्स भी गठित किया गया है जो इन जीएसटी सुधारों की व्यवस्था में लगेगा। इतना ही नहीं, हाईपावर डेमोग्राफी मिशन की शुरुआत, देश में हो रहे आबादी के पैटर्न में बदलाव पर अध्ययन करेगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के समय में सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ और अवैध प्रवास से निजात पाना बहुत ही जरूरी हो गया है। आज हमारा देश भारत चीन को पछाड़कर दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन चुका है और प्रधानमंत्री ने यह बात कही है कि हमें अपनी भूमि पर किसी भी प्रकार के जनसांख्यिकीय असंतुलन से बचना चाहिए। इसी क्रम में उक्त मिशन की शुरूआत भारत में की जाएगी। अंत में यही कहूंगा कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमारे देश के प्रधानमंत्री की रोजगार एवं कर सुधार श्रेणी में रोजगार योजना, जीएसटी सुधार, टास्क फोर्स का गठन, रक्षा एवं सुरक्षा श्रेणी में सुदर्शन चक्र मिशन, सुरक्षा कवच, जेट इंजन आत्मनिर्भरता, ऊर्जा व तकनीकी आत्मनिर्भरता श्रेणी में सेमीकंडक्टर चिप्स, परमाणु ऊर्जा विस्तार, डीपवाटर मिशन,अंतरिक्ष नवाचार श्रेणी के अंतर्गत गगनयान, अंतरिक्ष स्टेशन तथा सामाजिक व राष्ट्रीय हित श्रेणी में जनमिशन, किसानों का संरक्षण, संविधान गौरव 'आत्म–निर्भर', 'उन्नत', और 'विकसित भारत' का एक बहुआयामी, एक मजबूत और दूरदर्शी रोडमैप है।

–सुनील कुमार महला

शहिदों को दी श्रद्धांजलि, बेहतर कानून-व्यवस्था एवं विकास पर फोकस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , इस वर्ष 79 वां स्वतंत्रता दिवस राज्य स्तरीय समारोह मे मुख्यमंत्री के बदले झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने रांची में ध्वाजारोहण किया । अपने भाषण में झारखंडवासियों को शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश की विकास यात्रा, ऐतिहासिक गौरवशाली परंपरा को स्थान दिया । उन्होंने कहा कि आज देश और दुनिया झारखंड की ओर देख रहे हैं। हमारा प्रदेश आज देश के साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है। उन्होंने अपने संबोधन की शुरुआत भगवान बिरसा मुंडा की पावन धरती को नमन करते हुए की और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस आदि को स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी। उधर राज्य के विभिन्न भागों में मंत्रीगण , अधिकारियों आदि ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी ।

मुख्य आयोजन स्थल मे राज्यपाल ने वीर सिदो-कान्हू, चांद-भैरव, बुधु भगत, नीलाम्बर-पीताम्बर, पांडेय गणपत राय, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव और शेख भिखारी जैसे झारखंड के अमर सपूतों को भी याद किया। फिर शिबू सोरेन को विशेष श्रद्धांजलि देते हुए कि झारखंड में अवसरों की कोई कमी नहीं है। चाहे आधारभूत संरचना में निवेश हो, ऊर्जा क्षेत्र को सशक्त बनाने की बात हो, उद्योगों में नवाचार की पहल हो, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में उन्नति हो या कृषि में नए सुधारों को लागू करने की बात हो या खेल के क्षेत्र की बात को तजब्बो दु संगठित अपराध पर प्रभावी कार्रवाई के चलते 197 नक्सली गिरफ्तार हुए, 17 मारे गए और 10 ने आत्मसमर्पण किया। अवैध खनन, वन कटाई, बिजली चोरी व भू-माफियाओं पर भी सख्ती बरती जा रही है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत लाभार्थी आधारित व्यक्तिगत निर्माण में स्वीकृत 1.78 लाख आवासों में से 1.34 लाख आवास पूर्ण किए गए हैं। राज्यपाल ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए 'मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना से 51 लाख से अधिक महिलाओं को 2,500 प्रतिमाह मिल रहा है। पर्यटन विकास के लिए मसानजोर डैम, बिरसा मुंडा और सिदो-कान्हू की जन्मस्थली का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। राज्यपाल ने प्रदेशवासियों से विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर झारखंड के निर्माण में एकजुट होकर योगदान देने का आह्वान किया और कहा कि स्वतंत्रता दिवस हमें अपने कर्तव्यों का स्मरण कराता है। किसानों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा गवर्नर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुरू की गई 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत हर पात्र किसान को प्रति वर्ष सीधे आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। साथ ही, किसान क्रेडिट कार्ड योजना के माध्यम से किसानों को समय पर सस्ती दरों पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। कृषि को सशक्त बनाने के लिए सिंचाई सुविधाओं का लगातार विस्तार किया जा रहा है। राज्य सरकार ने कृषि के क्षेत्र में सरकार ने पांच लाख किसानों का 2,300 करोड़ रुपये का ऋण माफ किया है। किसान समृद्धि योजना के तहत सौर ऊर्जा आधारित पम्पसेट पर 90 फीसदी अनुदान दिया जा रहा है। मत्स्य उत्पादन में झारखंड ने 3.6 लाख मीट्रिक टन उपलब्धि हासिल की है। खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत 2.6 करोड़ लाभुकों को मुफ्त चावल-गेहूं और 'पीवीटीजी डाकिया योजना से 75 हजार परिवारों को घर-घर 35 किलोग्राम चावल एवं गेहूं प्रति परिवार बंद पैकेट में पहुंचाया जा रहा है। 34 लाख परिवारों को स्वच्छ पेयजल मिला राज्यपाल ने आगे कहा कि राज्य में जल जीवन मिशन के अंतर्गत 34 लाख परिवारों को स्वच्छ पेयजल और 2,700 से अधिक गांवों को 'हर घर जल घोषित किया गया। स्वच्छ भारत मिशन में 48 लाख व्यक्तिगत और 1,275 सामुदायिक शौचालय बनाए गए। जमशेदपुर को तीन से दस लाख आबादी श्रेणी में देश के सबसे स्वच्छ शहरों में तीसरा स्थान मिला और बुंडू नगर पंचायत को प्रॉमिसिंग स्वच्छ शहर के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि सड़क निर्माण में पिछले वित्तीय वर्ष में 2,075 किमी सड़क और 9 पुल पूर्ण हुए, जबकि 13,000 करोड़ रुपये की लागत से 3800 किमी सड़क निर्माण से जुड़ी परियोजनाएं प्रगति पर हैं। मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना से 1624 किमी सड़क और ग्राम सेतु योजना से 158 पुलों का निर्माण पूर्ण हुआ। उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए निवेश नीति को आकर्षक बनाया जा रहा है और एमएसएमई के लिए नियामक प्रक्रियाएं सरल की गई हैं। 15 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज गर्वनर ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र में 'मुख्यमंत्री अबुआ स्वास्थ्य योजना के तहत पात्र परिवारों को 15 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिल रहा है। पांच नए मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। 10 हजार करोड़ रुपये रिम्स-2 सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल के लिए स्वीकृत किए जा रहे हैं। नए आवासीय विद्यालय स्थापित करने की स्वीकृति राज्यपाल ने कहा कि राज्य के प्रतिष्ठित नेतरहाट आवासीय विद्यालय की तर्ज पर पश्चिमी सिंहभूम, बोकारो और दुमका में नए आवासीय विद्यालय स्थापित करने की स्वीकृति दी गई है। उत्कृष्ट विद्यालयों की सफलता और विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को देखते हुए 100 नए उत्कृष्ट विद्यालय प्रारंभ करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। एसटी, एससी और पिछड़े वर्ग के 4 लाख छात्रों को साइकिल वितरण योजना का लाभ दिया गया है।

उधर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पैतृक गांव नेमरा में किया झंडोत्तोलन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने पैतृक गांव नेमरा, रामगढ़ में झंडोत्तोलन कर तिरंगे को सलामी दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने समस्त झारखंड वासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने नेमरा में अपने दिवंगत पिता दिशोम गुरु शिबू सोरेन के श्राद्ध कर्म में भी शामिल रहे ।

झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन पंचतत्व में विलीन

राज्यपाल से लेकर अनेकों ने दी श्रद्धांजलि , घोड़ाबांधा में पुत्र सोमेश ने दी मुखाग्नि

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

जमशेदपुर , झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन का पार्थिव शरीर शनिवार दोपहर उनके निर्वाचन क्षेत्र घाटशिला ले जाया गया। सोरेन का दिल्ली के एक अस्पताल में शुक्रवार को इलाज के दौरान निधन हो गया था उसके बाद रांची लाया गया ।रांची में राजपाल, विधानसभा अध्यक्ष , मंत्रीगण ,पार्टी नेता तथा विपक्ष के नेतृत्वकर्ता समेत गणमान्य लोगों ने श्रद्धांजलि दी ।

उसके बाद उनके पार्थिव शरीर को घाटशिला के मऊ भंडार मैदान में नेताओं, पार्टी कार्यकर्ताओं और आम नागरिकों ने उन्हें श्रद्धांजलि । शनिवार शाम झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरन । अपने पुस्तैनी विधानसभा इलाके में पंचतत्व में विलीन हो गये । जाहां उनके बड़े पुत्र सोमेश सोरेन ने घोड़ाबांधा में उनको मुखाग्नि दी ।

इसे पहले संसदीय कार्य मंत्री राधाकृष्ण किशोर, कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, राज्यसभा सदस्य महुआ माझी सहित अन्य लोगों ने विधानसभा परिसर में सोरेन को श्रद्धांजलि दी थी ।

झारखंड के राज्यपाल ने सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद संवाददाताओं से कहा, ''मैं एक हफ्ते पहले अस्पताल में उनसे मिलने गया था। मुझे बताया गया कि उनका मस्तिष्क मृत हो चुका है। ऐसी स्थिति में उनके ठीक होने की संभावना बहुत कम थी। चिकित्सकों ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया।''

राज्यपाल ने शोकसंतप्त परिवार के सदस्यों से भी मुलाकात की और संवेदना व्यक्त की।

झारखंड के राज्यपाल गंगवार ने 'एक्स' पर लिखा, ''रामदास सोरेन जी का असामयिक निधन राज्य के लिए अपूरणीय क्षति है।''

विधानसभा अध्यक्ष महतो ने कहा, ''रामदास सोरेन पृथक झारखंड आंदोलन के सिपाही और योद्धा थे। बाद में वह विधायक और फिर मंत्री बने। उन्हें स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग का प्रभार दिया गया था और वह अच्छा काम कर रहे थे। वह बहुत ही सरल और लोकप्रिय नेता थे। उनका निधन राज्य के लिए बहुत बड़ी क्षति है।''

परिवहन, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री दीपक बिरुआ ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की ओर से सोरेन को श्रद्धांजलि अर्पित की, जो अपने पिता और पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के श्राद्ध कर्म के लिए रामगढ़ जिले के नेमरा गांव में हैं। झारखंड भाजपा प्रमुख बाबूलाल मरांडी ने कहा, ''सरल और सौम्य व्यक्तित्व के धनी रामदास जी के निधन से राज्य की राजनीति में एक गहरा शून्य पैदा हो गया है।''

इससे पहले झामुमो और कांग्रेस के कई नेता रांची हवाई अड्डे पहुंचे और उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा, ''रामदास सोरेन हमेशा वंचित और पिछड़े समुदायों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे। उनका पूरा राजनीतिक जीवन जनसेवा के लिए समर्पित रहा।''

अंतिम संस्कार में पूर्व मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा, रघुवर दास, चंपाई सोरेन, मंत्री चामरा लिंडा, मंत्री दीपक विरूवा, मंत्री इरफानअसारी, मंत्री दीपिका पांडे, सांसद विद्युत बजट महतो, राजू गरी, मोहन कर्मकार , जसबीर सिरै, विनोद सिह, सुनिल महतो, विधायक मंगल कालिंदी , विधायक सुखराम , विधायक समीर मोहान्ती ,विधायक कुणाल षाडगी , विधायक संजीव सरकार , विधायक दुलाल भूईयां पूर्व सांसद प्रदीप बालमुचू,आदि अनेकों शामिल हुए थे ।

सनद रहे कि स्व रामदास सोरेन दो अगस्त को आवास में बाथरूम में गिरने के बाद जमशेदपुर से राष्ट्रीय राजधानी के अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सोरेन की हालत गंभीर थी और उन्हें जीवनरक्षक प्रणाली पर रखा गया था।

उधर झारखंड सरकार ने सोरेन के निधन पर शनिवार को एक दिन का राजकीय शोक घोषित किया है ।

स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती का हत्यारा गिरफ्तार होगा : मनमोहन सामल

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती के हत्यारे की गिरफ्तारी पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा, जो आयोग गठित किया गया था, उसकी अब जाँच हो रही है। विधि विभाग और कानूनी विशेषज्ञ जाँच कर रहे हैं। उचित समय पर उचित निर्णय लिया जाएगा ।इसमें शामिल लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। क्या कांग्रेस भी लक्ष्मणानंद की हत्या की फाइल खोलना चाहती है, इस सवाल के जवाब में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा, 'कांग्रेस जो मांग कर रही है, वह कोई बड़ी बात नहीं है, भाजपा जो ठान लेगी, वही करेगी।'

भाजपा विधायक बाबू सिंह ने कहा, भाजपा सरकार स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती के हत्यारों को ज़मीन के नीचे से खोज निकालेगी। हत्यारा चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, चाहे वह राजनीति में गद्दी पर बैठा हो या प्रशासनिक व्यवस्था में, उसे ज़मीन के नीचे से निकाला जाएगा। आम जनता को सरकार पर भरोसा है। आज संतों ने भी सभा के मंच से उनके हत्यारों को पकड़ने का आह्वान किया है। 18 साल हो गए हैं। हत्यारे घूम रहे हैं। भाजपा सरकार को ज़िम्मेदारी लिए एक साल हो गया है।

यह सरकार हत्यारों, असमियों को पकड़ेगी। हत्या में शामिल या शामिल षड्यंत्रकारियों को पकड़ा जाएगा। उनके खिलाफ जाँच चल रही है। हत्यारे भूमिगत हों, तब भी उन्हें बाहर निकाला जाएगा। इस मुद्दे पर भाजपा विधायक बाबू सिंह ने कहा, भाजपा सरकार स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती के हत्यारों को ज़मीन से ढूंढकर लाएगी।

हत्यारा चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, चाहे वह राजनीति में गद्दी पर बैठा हो या प्रशासनिक व्यवस्था में, उसे ज़मीन से बाहर लाया जाएगा। आम लोगों को सरकार पर भरोसा है। आज संतों ने भी विधानसभा से आह्वान किया है कि उनके हत्यारों को पकड़ा जाए। 18 साल हो गए हैं। हत्यारे घूम रहे हैं। भाजपा सरकार को ज़िम्मेदारी लेते हुए एक साल हो गया है। यह सरकार हत्यारों, असमियों को पकड़ेगी। हत्या में शामिल षड्यंत्रकारियों को पकड़ा जाएगा। उनके खिलाफ जांच चल रही है। हत्यारे चाहे भूमिगत ही क्यों न हों, उन्हें बाहर लाया जाएगा।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत सूचना मांगे गए तरीके से दे सरकार, सुरक्षा उपाय भी हो पुख्ता।

नरेश गुणपाल

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 को डिजिटल युग से जोड़ते हुए माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के चीफ जस्टिस देवेंद्र कुमार उपाध्याय और जस्टिस तुषार राव गेडेला की खंडपीठ ने याचिका संख्याः-8830/2025 दिनांकः-02.07.2025 को एक ऐतिहासिक निर्णय में कहा कि सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत मांगी गई जानकारी अब ईमेल, पेनड्राइव या अन्य किसी भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से दी जा सकती है। न्यायालय ने यह आदेश आदित्य चौहान और एक अन्य व्यक्ति द्वारा दायर याचिका पर दिया।

याचिका में जन सूचना अधिकारियों और अन्य संबंधित प्राधिकारियों द्वारा आरटीआई अधिनियम के तहत आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मोड में सूचना उपलब्ध कराने का निर्देश देने की मांग की थी। न्यायालय ने सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत मांगी गई जानकारी को याचिकाकर्ता को उनकी पसंद के इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे- ईमेल या पेन ड्राइव से देने के लिए केंद्र सरकार को तीन महीने के भीतर स्पष्ट नियम बनाने का निर्देश दिया है. ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत आवेदक अपने अनुरोध के प्रारूप में जानकारी प्र ा तकर सके एवं डिजिटल रू पमें सूचना मुहैया करवाना बाध्यकारी बन सके।

बॉक्स- याचिका में अहम बाते

न्यायालय ने सुनवाई के दौरान कहा कि सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 2(जे), 4(4) और 7(9) पहले से ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना देने की अनुमति देती हैं, लेकिन इसे लागू करने के लिए कोई प्रभावी ढांचा नहीं है। याचिकाकर्ताओं ने कोर्ट से आग्रह किया था कि सूचना पाने के लिए अब भी फ्लॉपी डिस्क और डिस्केट जैसे पुराने माध्यमों का ज़िक्र किया जाता है, जबकि जन सूचना अधिकारी अक्सर

ईमेल या पेन ड्राइव जैसे सरल और सुलभ तरीकों से जानकारी देने से इनकार कर देते हैं, जबकि अधिनियम इसकी अनुमति देता है। याचिका में आरटीआई शुल्क भुगतान के लिए यूपीआई और नेट बैंकिंग जैसे आधुनिक तरीकों को अपनाने की भी सिफारिश की गई, ताकि पूरी प्रक्रिया और अधिक उपयोगकर्ता-अनुकूल बनाई जा सके।

केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के अधिकतर विभाग आज भी केवल फोटोकॉपी या फिर हार्डकॉपी देने पर अड़े रहते है, याचिका में मांग की गई कि सूचना को आसानी से, कम खर्च में और पारदर्शिता के साथ मुहैया कराया जाए। उन्होंने आरटीआई की धारा 2(जे) का हवाला देते हुए कहा कि फ्लॉपी, डिस्क, कैसेट, टेप या अन्य किसी भी इलेक्ट्रॉनिक मोड में सूचना मुहैया करवाई जा सकती है। न्यायालय ने माना कि डिजिटल साधनों के माध्यम से सूचना मुहैया करवाना पारदर्शिता को और मजबूत करेगा, साथ ही आरटीआई को आम नागरिक के लिए सरल एवं सुलभ बनाएगा। यह फैसला डिजिटल भारत की सोच को और भी न्यायिक समर्थन प्रदान करता है।

नवीन के आवास पर बड़ी बैठक, नवीन करेंगे बड़ा ऐलान !

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर : नवीन के आवास पर बड़ा हंगामा हुआ। बीजू जनता दल (बीजद) सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की अध्यक्षता में नवीन के आवास पर एक अहम बैठक हुई। बताया जा रहा है कि इस बैठक में पार्टी की संगठनात्मक समीक्षा और आगामी रणनीति पर चर्चा हुई ।बैठक में पार्टी के वरिष्ठ नेता और विभिन्न जिला अध्यक्ष उपस्थित थे।उपस्थित नेताओं में सुदाम मरांडी, अमर पटनायक, रोहित जोसेफ राष्ट्रक, प्रफुल सामल, जगन्नाथ सारका, सलुगा प्रधान और प्रदीप दिशारी के अलावा अन्य जिला अध्यक्ष और कोर कमेटी के सदस्य शामिल थे।

बताया जा रहा है कि आगामी राजनीतिक रणनीति को लेकर अहम फैसले लिए जा सकते हैं। खास तौर पर उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को लेकर भी कुछ चर्चा हुई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी–18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए–4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली– 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023